

भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही ।

ग्रन्थ काल चरित्र

(भाषल दरिया साहेब)

साखी - ९

ज्ञान दीपक ग्रन्थ मम, जबहिं पूरन कीन्ह ।

आगम तबहिं काल का, अपना परिचय दीन्ह ॥

चौपाई

सतनाम	ग्रन्थ सम्पूर्ण जबहि कीन्हा। तबहिं काल पयाना दीन्हा॥	सतनाम
सतनाम	मृग छाला और काँध जनेऊ। अड़बंद बांधो कटि सेऊ॥	सतनाम
सतनाम	माथे केश सुन्दर अति शोभा। बोलत बैन प्रेम अति लोभा॥	सतनाम
सतनाम	नखा-सिखा सुन्दर बहुत सलोना। बोली बचन भया फिर मौना॥	सतनाम
सतनाम	तब हम पूछा सुरति विचारी। हौ तुम्ह कवन कहो निरुआरी॥	सतनाम
सतनाम	कहाँ से आए कहाँ चल जाए। यह निज अर्थ कहो समुझाए॥	सतनाम
सतनाम	भाग सो आन कही भगवाना। अविनाशी हम कही अमाना॥	सतनाम
सतनाम	जम्मू द्वीप हम सब फिर आई। सब जीव खाए काल जहड़ाई॥	सतनाम
सतनाम	जग महं ज्ञानी तुम कह जाना। इहमि कारण मै किन्ह पयाना॥	सतनाम
सतनाम	अमृत वाणी हमें सुनावहु। पद पंकज निज हृदय लावहु॥	सतनाम
सतनाम	जोग विराग कहेउ सत बानी। लागी झरी मानो अमृत सानी॥	सतनाम
सतनाम	भया मगन मन हँसके बोला। तुम्हारी वचन अहे अनमोला॥	सतनाम

સાચી - ૨

तुम्हारा थमा हृद है, औ सब सकल जहान ।

धन्य-धन्य तुम सही हो, केता करो बखान ॥

चौपाई

सतनाम	सत तो जिन्दा अजर अमाना । बेबाहा बेकिमती जो जाना ॥
सतनाम	तीन्हि तखत दिन थैं जानी । अजर अमान निके पहचानी ॥
सतनाम	उनकर हुक्म सदा सिर राखों । अदल ज्ञान यह जग में भाखों ॥
सतनाम	उन्हके तुमके दुजा न कहई । ब्रह्म एक देह दुई अहई ॥
सतनाम	तुम अस्थायी गोप वोए भैऊ । अगम अगोचर किमी लखा पैऊ ॥
सतनाम	तब हम जाए भवन पगु ढारी । दल दास से वचन विचारी ॥

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				
सतनाम	ब्रह्मचर्य है कौंध जनेऊ। अविगति वचन कहे उह सेऊ॥ हैदहु कवन लखौ नहिं आवे। दाव घात करी ज्ञान सुनावे॥ साहब चलहि हमहूँ चली आई। उनकर वचन सुनहु चित लाई॥ प्रसाद लेइ तब दीन्ह पठाई। डारिशी नहीं राखी छिपाई॥ तब हम निकट तख्त के आई। बहुत प्रेम के पूछा जाई॥	सतनाम	साखी - ३ प्रसाद छपाए काहे के राखो, प्रेम प्रीत को भाव। सन्त निकट जब जाइहैं, दुविधा भाव न आव॥ चौपाई	सतनाम	पाए प्रसाद मुखा बहु विधि प्रीति। जैसे साधु सन्त की रीती॥ पीछे बात बोलन तब लागे। आदि अन्त सुन सन्त सुभागे॥ चौथा लोक के हम हैं वासी। तीन लोक जम दारुन फांसी॥ फिरेऊ पृथ्वी यह नौ खण्डा। कोई न वाचेउ सब कहं डंडा॥ अन्न खाए सोए सब लोग। शक्ति संग है दृढ़ नहीं जोगा॥ दलदास तहवां चलि अयऊ। अगम कथा कुछ बात चलयऊ॥ काल झण्डा तर सब जग जानी। केहु न बाचा सबकी हानी॥ तुम्हु जैइहऊ जम के त्राशा। काल झण्डातर तोहरो नाशा॥ अशकै बोला बहजुत रीसीआई। अन्न खाए घर सोवहु जाई॥ तब हम दल कहं लीन्ह बुलाई। नाहक झगड़ा किमि करी लाई॥ हैदहु कवन कहाँ यह रहई। अपने थै पर किछु नहिं कहई॥	सतनाम	साखी - ४ सीरीरी करत वक्ता रहे, निगम अगम समुझाए। अति प्रचण्ड दारुण बोले, जनु अविनाशी आए॥ चौपाई	सतनाम	चंचल चपल बुद्धि बड़ अहई। कहत बात किछु शंका न लहई॥ वासर बीति रजनी चली अयऊ। बाहर थै यह सब मिल कियेऊ॥ मृग छाला बैठा तहाँ डारी। आसन वासन जोग सम्हारी॥ हम तुम गोष्ठी करी एकान्ता। जोग विराग ज्ञान को मन्ता॥ जाते रजनी जाये बिहाई। उठी प्रातः फिर पन्थ चली जाई॥ जो सोवै तेहि जोगी न कहई। जो जागे तेहि काल न लहई॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम				

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जो जागे जो जुगुति जानै । निसदिन सतगुरु शब्द बखानै ॥	सतनाम	आसन पदुम कमल प्रकाशो । जागे जोग भोग कै नाशो ॥	सतनाम	निसवासर सतगुरु पद लोचै । दूरमति काल पाप सब मोचै ॥	सतनाम
सतनाम	जोग पूछो तो सब हम कहई । हमसे वाचल कछु नहीं अहई ॥	सतनाम	आसन दृढ़ मूल कहं साधो । पांचों इन्द्री निग्रह बाँधो ॥	सतनाम	पहले साधो पांचों वाई । तब वोए बिन्द ले गगन समाई ॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ५	सतनाम	त्रिकुटि मध्ये साधिए, जहां कमल प्रकाश ।	सतनाम	गंगा जमुना सरस्वती, जहां अमी को वास ॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	जमुना गंगा त्रिकुटि तीरा । देखो मोती अवगति हीरा ॥	सतनाम	निद्रा आलस दूर सब जाई । सूक्ष्म छुआ तब सुख पाई ॥	सतनाम
सतनाम	चन्द सूर दोए करै विचारा । पूरा जोग भव सुदिन सम्हारा ॥	सतनाम	सुदिन विचारी पन्थ सो चलई । विचारे आसन तब करई ॥	सतनाम	बाहर बचन कहे सो जोगी । जो कोई पूछे वचन वियोगी ॥	सतनाम
सतनाम	नर मानहिं प्रतीति सम्हारी । है कोई सिद्ध वचन विचारी ॥	सतनाम	सगुन विचारी पानी सो पीजे । सगुन विचारी अन्न कहं लीजे ॥	सतनाम	अतना जोग यह जुगति बतावै । ज्ञान बिना फिर मुक्ति न पावै ॥	सतनाम
सतनाम	नाहीं ओए सिद्ध गिद्ध ओए कहई । उड़े आकाश जीमि पर रहई ॥	सतनाम	जोग चिन्ह हम दूर सब कियेऊ । ज्ञान विचारे सब सुख लहऊ ॥	सतनाम	ज्ञानी जग में बिरला पेखा । जोग जुगती जग बहुते देखा ॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ६	सतनाम	सतगुरु वचन विचार कै, करो गमी गुरु ज्ञान ।	सतनाम	भवसागर में बाची हों, सत शब्द विख्यान ॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	बिना जोग सिद्ध नहिं होई । काम कला सब जात बिगोई ॥	सतनाम	जबलगि इन्द्री वश नहिं होई । तव लगि दुख दारुण दे सोई ॥	सतनाम
सतनाम	होये सिद्ध काम धारी मारे । पाँच पच्चीस सब समकारी डारे ॥	सतनाम	कामिन कनक संग नहीं वासी । इमि योगी जग फिरे उदासी ॥	सतनाम	दण्ड कमण्डल औ मृग छाला । पुहुमि सेज न दुख जंजाला ॥	सतनाम
सतनाम	3	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	यही प्रकार रमे सब देशा। जोग जुगति जो गहे संदेशा॥	सतनाम	पहले जोग ज्ञान तब होई। जोग बिना सब जात बिगोई॥	सतनाम	जिन्ह-जिन्ह जो विकट यह राधा। आलस निद्रा पवन ही साधा॥	सतनाम
सतनाम	शक्ति साधि सब जात बिगोई। अटल ब्रह्म उद्गारे सोई॥	सतनाम	काया साधि बहुत दिन राखे। निशदिन जोग जुगति सत भाखे॥	सतनाम	येहि विधि कहो सुनो प्रवीना। बिना जोग तप होय छीना॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ७					
सतनाम	पाँच पच्चीस ही साध के, रहनी जोग करार।					
सतनाम	सिद्ध साधु सब जानही, यही मता हमार॥					
सतनाम	छन्द तोमर - १					
सतनाम	तुम जोग धोखा कीन्ह, इमि सिद्ध साधु न भिन्न॥	सतनाम	रहनी गहनी निरोग, जहां पाप पुण्य ना भोग॥	सतनाम	इमि पदुम आसन सिद्ध, जहां अमीय सलिता निद्ध॥	सतनाम
सतनाम	जब गहो मुद्रा चारी, सब कर्म काल ही डारी॥	सतनाम	तेहि आड अटक न होय, सब धोखा डारे धोय॥	सतनाम	सो सिद्ध सुधर संत, मम कहेव अपनो मंत॥	सतनाम
सतनाम	विवेक जोग विराग, भव लाग कबहि न दाग॥	सतनाम	सोई सिद्ध पूरा ज्ञान, भव रहित अनुभव ध्यान॥	सतनाम	काल कर्म निखेद, सब जानु काया भेद॥	सतनाम
सतनाम	सोई योगी औघड़ नाथ, नहीं सेवक संग्रह साथ॥	सतनाम	नहीं झोरि मत्रा मूल, नहीं जति पांति न कूल॥	सतनाम	नहीं मेला तीर्थ तीर, प्रचण्ड जग में वीर॥	सतनाम
सतनाम	लाखा महं कोई एक, जो गहे ऐसी टेक॥	सतनाम	मम फिरे बहुत उदास, तुम कहो ज्ञान प्रकाश॥	सतनाम	सब निर्गुण सगुण विचारी, कहेव ज्ञान गुण निरुआरी॥	सतनाम
सतनाम	छन्द नराच - १					
सतनाम	धन औतारा यही संसारा, तुम दर्शन में फल पाई।	सतनाम	शब्द उचारा ज्ञान विचारा, चर्चा गुण यह गमि आई॥	सतनाम	सगुण पसारा यही संसारा, निर्गुण गमि बिरला पाई।	सतनाम
सतनाम	सत पुकारा मुक्ति करारा, काम कला नहिं घट छाई॥	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - 9			
सतनाम			फिरे ओ सकल बिचारी, खोजत तुम कहं पाइया। कहो वचन निरवारी, सुकृत तुम साचो सही॥ चौपाई		सतनाम	
सतनाम			उठे प्रातः प्रीत बहु कीन्हा। चली भव पंथ साथ कर लीन्हा॥ जो मैं कहुं सोई मत लहई। आपन गुण गमि कुछ नहीं कहई॥ फिर कुछ वचन जो बोला विचारी। सुन लीजे निजु भक्ति पियारी॥ सगुण स्वरूप कुछ कहो विचारी। ललित प्रेम निज भक्ति सुधारी॥ निरंकार अकार स्वरूपा। रामरूप दशरथ धर भूपा॥ दर्शित मारो रावण सिर खण्डा। तीन लोक महं है प्रचण्डा॥ क्रीडा कीन्हों कृष्ण कन्हई। सो लीला मोहिं वर्णन सुनाई॥ लीन्ह गोवर्धन गोकुल राखा। वेद पुराण सब कोई भाखा॥ थाके इन्द्र मेघ जल हारे। वार वांकेऊ नहीं हरि रखवारे॥ पकड़्यो चोटी कंस पछार्यो। कृति कहा गुण सब अधिकरो॥ निर्गुण सगुण दुनो यह अहई। या छोड़ मत दूजा नहिं कहई॥		सतनाम	
सतनाम			साखी - ८		सतनाम	
सतनाम			निरंकार आकार धरि, धरनी रचो बनाए। सब घट ब्रह्म व्यापिया, चतुरानन गुण गाए॥ दरिया वचन : चौपाई		सतनाम	
सतनाम			आवे जाए जो धरे शरीरा। होये पतन सुनो मति धीरा॥ वह नहिं दशरथ सुत कहाई। नहीं लंका पति गर्द मिलाई॥ यह अहे निरंजन अंजन धरिया। तिर्गुण स्वरूप मया मद भरिया॥ ब्रह्म फूट ब्रह्म यह भयऊ। तीन लोक में कर्ता कहेऊ॥ नहीं गोपी पति नन्द पियारा। यह लीला है मन करतारा॥ मनही गोवर्धन कर गहि लीन्हा। तीन लोक महं परिचय दीन्हा॥ मन अरुझा मन कंस पछारी। यह लीला मन है बनवारी॥ वह तो पुरुष सबन ते न्यारा। मात-पिता नहीं त्रिगुण बेकारा॥ वह सतपुरुष है सत शरीरा। उपजे बिनसे बहु विधि वीरा॥ उपजि बिनसि नहीं घट में आवे। अहे अलेप अंत को पावे॥ मम पर दया दरश यह दियऊ, निगम अगम गुण इमि कर गयऊ॥		सतनाम	
सतनाम			5		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ६			
			अमर पुरुष अमान है, निरंकार के पार।			
			थाके शेष सहस्र मुख, चारी वेद विस्तार॥			
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	रहा मौन तब कुछ नहीं कहई। अपने चित में मत कुछ लहई॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	आये ग्राम निकट नियराई। बैठे निजु तहां थय बनाई॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	हम सेवा अब कीन्हो डेरा। करि प्रपंच बात बहु फेरा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	करे निमेरा बात विचारा। अपने मत भया करतारा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	तेजा दास दर्शन के गयऊ। करि सलाम तब पूछत भयऊ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	है यह कौन कहां ते आई। याको अर्थ कहो समुझाई॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	है निश पिरीह सगुण विचारी। निर्गुण कथा कहे निरुआरी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	चलि जाहो तुम वाके पासा। करे सिरीर कुछ जअब तमाशा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	तब ओय पूछा कौन ते अहई। काकर ज्ञान प्रेम निज गहई॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	तबहि ऐसन बोल बिचारी। बेबाहा के नाम उचारी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	दरिया साहेब ज्ञानी ज्ञाता। कहो प्रेम भक्ति सत बाता॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	वोही से कीन्हो बहुत जो प्रीती। इनकर बुद्धि लिया ओए जीती॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १०			
			पैठा घट में विकट हो, निकट निरालेप पास।			
			पुरुष पुराना ब्रह्म है, कीन्ह वचन प्रकास॥			
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	हमसे आय पूछत इमि भयऊ। इनकर लीला लखि नहिं अयऊ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जोगी जती जग है बहुतेरा। चलत फिरत करु जग में फेरा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जो तुम कहत हो सो नहिं अहई। मन परिपंच बात सब लहई॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	फिर-फिर आवहिं फिर-फिर जाई। जो कुछ कहे सुने लौ लाई॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	दीन मनी मध्य जबेयह रहेऊ। निंदी ग्रासा सब कहां भयऊ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	तब हम बैठक करहिं विचारा। है यह कौन कहे करतारा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	हमरे निकट विकट चलि अयऊ। दुविधा बात जो हमें सुनयऊ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	उठ-उठ हम कहा घोरण लागा। ऐसी वचन प्रेम निज पागा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	तुमने अदल किया प्रचारी। ऐसा तेग निर्मल तुम झारी॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	तेजहु दुखा करु सुखा के आसा। ऐसा वचन कीन्ह प्रगासा॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	हाथी धोड़ा लेहु खजाना। यह सब देऊ मेरो मन माना॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			6			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ११			
सतनाम			खर्चहू खाहु सुख बेल सहु, तेजहु विपत्ति वियोग। चारों फल तुझे दीजिहो, धन-धन कहिहैं लोग॥		सतनाम	
			छन्द तोमर - २			
सतनाम	इमि	कहेओ	तोमर	छन्द,	तै	दुरि-दूर मति द्वंद॥
सतनाम	नहीं	तुरे	औ	गज	साज,	मोहिं सुन लागत लाज॥
सतनाम	नहीं	माया	ममता	भोग,	करि	ज्ञान गुण निजु जोग॥
सतनाम	इमि	अटल	पद	निजु	राज,	सत अदल मेरु काज॥
सतनाम	तुम	बोले	वचन	विकार,	यह	वचन नाहीं करतार॥
सतनाम	हम	ज्ञान	गुण	प्रचण्ड,	सम	पुरुष ब्रह्म निखण्ड॥
सतनाम	दिन	तखत	अदल	निरंत,	सब	ज्ञान गुण निज मंत॥
सतनाम	तुम	बुद्धि	कीन्ह	प्रकाश,	नहीं	आवत जम की त्रास॥
सतनाम	तुम	त्रिगुण	धरेव	शरीर,	यह	मैं न ममता वीर॥
सतनाम	तुम	जोईनी	संकट	वास,	इमि	वचन कर प्रकाश॥
सतनाम	कोई	माया	मांगे	चोर,	तेही	देहु हाथी धोर॥
सतनाम	भव	भ्रम	चाहे	राज,	तेहि	देहु ऐसो साज॥
सतनाम	तुम	ठगयो	ठग	जग जानी,	जो	लेत ममता मानी॥
सतनाम	सो	लहे	त्रिगुण	धार,	किमी	होत भव जल पार॥
सतनाम	यह	ज्ञान	गुण	वैराग,	नहीं	कर्म कुबुधा काग॥
			छन्द नराच - २			
सतनाम	यहां	नहीं	भव	भरमा,	सब	निज कर्मा करते हम से इमि कही अंग॥
सतनाम	दिन	उपदेशा	गहऊ	सन्देशा,	सर्व	भेद पद सो लही अंग॥
सतनाम	अदल	हमारा	सत	विचारा,	चरण	कमल दल सो लेही अंग॥
सतनाम	कुमति	विकारा	सब	दूरी	डारा,	पार ब्रह्म परिचे करि अंग॥
			सोरठा - २			
सतनाम	सनु	निजु	वचन	हमार,	रहनी	गहनी यह भेद है।
सतनाम	सो	जन	होई	है	पार,	कुमती काल नहीं व्यापी है॥
			चौपाई			
सतनाम	झिन	जाल	मम	काटू	उतारी।	तब इमि वचन जो बोला विचारी॥
सतनाम	जो	मैं	कहों	काहे	नहीं	करहु। जगत भार सब दूरि परिहरहु॥
			7			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सिख कीन्ह बहु दिन्ह उपदेशा। औ जग बहुते कहा सन्देशा॥	तुमरे कारण हम चलि आई। जो मैं कहु सुनो चित लाई॥	उतरा पंथ श्रृंग एक अहई। पुहुप विमान उतरी तहां रहई॥	चलहु ना तुम जहां सतकर रेखा। यह गम ज्ञान किन्हु किऊ पेखा॥	वहां बैठके झांक झरोखा। नदी समान सिंधु सब रोखा॥	तीन उपर पिंजरा जनु अहई। जीव जहां मुनि सब कहई॥	और सुमेर सब शील समाना। श्रृंग बैठ सब दृष्टि अमाना॥
अमर लोक फिर वाके आगे। कहो वचन तुम सुनो सुभागे॥	मारग बाट झीन तहं अहई। इमि कर लोक पयाना करई॥	साखी - १२	अमरापुर महं बैठके, सब सुख बिलसहु जाय।	तेजहु द्वन्द्व फंद सब, अब मैं भयो सहाय॥	चौपाई	जीव चेतावन हम चली आई। पुरुष वचन कहा समुझाई॥
जाके दीन्ह वाहि कर आसा। सो नर जइहैं केहके पासा॥	चार युग मोहिं हद पर भयऊ। पुरुष सदा गुण हृदय लयऊ॥	दरश दीन्ह मोहि अविगति ज्ञाना। अजर अमर सत पुरुष अमाना॥	लोक बरण मम सबहै देखा। अवरी कहा कुछ मानु न लेखा॥	मानो सोई पुरुष सत कहेऊ। तुमरि वचन काल जिमि लहेऊ॥	पुरुष छोड़ और कोई कहई। ताकर वचन काल सब अहई॥	बेबाहा अकूफ कही जो दीन्हा। जग में चिन्हि हो काल परमीना॥
तुम नर देह काल का बासा। सत्य पुरुष नहीं गर्भ निवासा॥	तब हंसी उठा बिलग होई जाई। अपनी थैय पर बैठा आई॥	सिरीर करे प्रपंच दिखाई। मानो काल देह धारी आई॥	साखी - १३	वासर वित रजनी भई, कोरनिस कीन्ह सब आय।	अपने थैय पर बैठके, साबह को गुण गाय॥	चौपाई
भोर भये तिमिर सब नाशा। उदित भये जिमि भान प्रकाशा॥	भान कला छवि छीत पर छाई। दिन दिवाकर इमि गुण पाई॥	8	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जागे	नारी	पुरुष	एक	संगा।	जल	थल भौ गव औ रंगा॥
जागे	पंडित	पढ़े	पुराना।	जागे	हरिजन	भक्ति बखाना॥
जागहिं	पंक्षी	चराचर	अहई।	अपने	धन्धा	सब कोई लहई॥
तब	ओय	ऐसन	दिल में	पागा।	फंद	हमार कछु नहीं लागा॥
अब	कुछ	माया	रचो	बुद्धिमानी।	फेरो	दिल अपनी सहदानी॥
वहां	से	उठ	ग्राम में	अयऊ।	कर	प्रपंच काल गुण गयऊ॥
मारिस	बाण	माया	उर	लागा।	चले	तुरन्त ज्ञान जनु जागा॥
अति	प्रचण्ड	देखा	तहं	आई।	मानो	करता जिन्दा कहाई॥
तब	में	बैठ	गये	वही	पासा।	हमते कीन्ह वचन प्रकाशा॥
अमानति	हम	तुमके	देई	गयऊ।	अब	किमी कर मति दोसर भयऊ॥
साखी - १४						
बेबाहा पुरुष अमान हम, किमि नहिं करुं पहचानी।						
गदगद भव शरीर मम, लीन्ह वचन तब मानी॥						
चौपाई						
कीन्ह	तब	जुह	बहु	विधि	भांती।	हुलसयो प्रेम नैना चौपांती॥
तब	मम	दिल	में	ऐसन	ठयऊ।	रजगुण तमगुण सतगुण अयऊ॥
गैव	धात	यह	किमि	कर	भयऊ।	पुरुष विनसी दूसर देह पयऊ॥
मात-पिता	नहिं	छीर	कर	छापा।	तीनों	ताप पुरुष यह तापा॥
मरण	जीवण	उनहु	के	अयऊ।	अचरज	कथा यह किमि कर भयऊ॥
कीन्ह	विवेक	मम	संत	कर	मंता।	को कही सके पुरुष कर अंता॥
आवहि	जाय	फिर	देह	विराजे।	प्रगट	होय फिर छीत पर छाजे॥
मोहि	अभिलाष	दरश	इमि	भयऊ।	येहि	प्रकार पुरुष इमि अयऊ॥
श्रवण	सुनि	जब	सब	मिल	पयऊ।	दर्शन करे सबन मिल धयऊ॥
राजपुर	को	ब्राह्मण	वासी।	हम	से	प्रेम सदा प्रगासी॥
दिन	बहुत	मम	रहयो	बुलाई।	करिये	दया दृष्टि लौलाई॥
साखी - १५						
दीजे प्रवाना सब कहं, जो कोई है नर-नारी।						
दया दृष्टि कर पालिये, भव जल लेहु उबारी॥						
छन्द तोमर - ३						
मम	कहे	वो	वचन	विचारी,	इमि	भवन साफ बहारी।
अन	ऐन	और	अंजीर,	लिपीये	धौ	नीर॥
9						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
इमि	जय-जय	मंगलाचार,	प्रसाद	धारि	प्रकार ॥	
सब	कीन्हों	बिहित	बनाए,	प्रसाद	थार	धराए ॥
तब	अरज	कीन्ह	कर	जोरी,	इमि	प्रेम
संग	चलो	सबहिं	लिआए,	उन	रोका	वचन
हम	चलब	तुम्हारे	साथ,	करि	भक्ति	भाव
इमि	मन्दिर	के	पग	डारी,	सब	दरश
प्रवाना	कहे	फुरमान,	करि	दया	दीजै	दान ॥
प्रपंच	काले	कीन्हु,	इमि	छेक	सब	कहं
इमि	कृष्ण	पक्ष	को	भाव,	इमि	शुक्ल
उपदेश	दीन्हों	जानि,	इमि	परम	पद	पहचानी ॥
हम	जंग	उनसे	कीन्ह,	तुम	काल	को
मत	होय	नाही	हमार,	तुम	कीन्ह	बहु
इमि	काल	करसे	जानि,	सब	सूरति	भय
					गई	हानि ॥
					छन्द नराच - ३	
इमि	काल	प्रचण्डा	सब	जग	उंडा,	खंडित
करि	प्रपंचा	इमि	जग	मांचा,	कच्चा	पिण्ड
अनल	प्रगासा	जम	की	त्रासा,	त्रास	भई
हम	चले	विचारि	इमि	पगु	ढारी,	तरनी
					भव	जल
					किमि	तारी ॥
					सोरठा - ३	
					किमि	कर
					सुरचि	विचारि,
					कठिन	कर्म
					यह	काल
					है।	
					बहुविधि	फंदा
					डारि,	कहत
					सुनत	नहिं
					बन	परे ॥
					चौपाई	
विप्र	अरज	कीन्ह	सिर	नाई।	कुमति	काल
सहजादा	के	हुकम	न	कीन्हा।	ना	अपने
बहुत	गर्व	करि	बोला	अहंकारी।	छेक	लीन्ह
धार	धारो	दीन्हो	उपदेशा।	काल	कर्म	मेटि
नाहीं	तुम	अहो	जगत	गुरु	ज्ञाता।	कुमति
करसि	काल	अधिक	तब	जागा।	झगरा	करन
झारा	तेग	तुम	बहुत	निरन्ता।	अहे	काल
सात	द्वीप	पृथ्वी	नौ	खाण्डा।	छन्न	में
					निकट	है
					ब्रह्मण्डा ॥	

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	चाहे तुम कंह तोरि अड़ावे । करस काल जग इमि कर धावे ॥	सतनाम	वेवाहा के खाऊ दुहाई । मलो काल धारी निकट न आई ॥	सतनाम	तेहि दिन हुक्म हमहिं जो दीन्हा । किमि कर काल जो करहिं मलीना ॥	सतनाम
सतनाम	ऐसा फिरंग फेर जो दीन्हा । सबकी मत अपने कर लीन्हा ॥	सतनाम	साखी - १६	सतनाम	करसा काल कर्म करि, भ्रम गया सब लोग ।	सतनाम
सतनाम	छल बल बुद्धि विचारई, त्रिकुटि साधे जोग ॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	तब मैं ऐसन कीन्ह उपाई । काल रहा घट-घट सब छाई ॥	सतनाम
सतनाम	मम एक हूं काल अनन्ता । कौन बुझे सतगुरु को मंता ॥	सतनाम	इमि करि कहेऊ विवेक विचारी । चले तुरन्त तख्त पग डारी ॥	सतनाम	अर्ध रात्रि रैनं जब रहेऊ । इमि कर मत तब दिल में ठयऊ ॥	सतनाम
सतनाम	लीन्हा लियाए रहा सब लोग । चला काल संग विधि संजोगा ॥	सतनाम	हाट बांट में वचन उचारि । तुम तो बात कुमत कर डारि ॥	सतनाम	फिर ऐसन बुद्धि कथे बनाई । डारि मोह करता जनु आई ॥	सतनाम
सतनाम	इमि करि थय पर पहुंचा जाई । जहां तख्त निज हुदा बनाई ॥	सतनाम	देहु तख्त पर कपड़ा डारी । तब हम बैठहि सुदिन सम्भारी ॥	सतनाम	जब मम चलिहो तुम कहं दीहो । अबहि मम आपन कर लीहो ॥	सतनाम
सतनाम	विवेक विचार कहो मैं नीका । यह तो राजनीति का टीका ॥	सतनाम	साखी - १७	सतनाम	बक्शो साहब तख्त मोहिं, बखत कहा नहीं जाय ।	सतनाम
सतनाम	और कोई नहीं पाई हैं, कहेवो वचन समझाय ॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	तब मैं ऐसन कीन्ह विचारी । नीचे थैय दीन्ह तब डारी ॥	सतनाम
सतनाम	भया शेर तब लोग बटुराना । कर्ता अपने आय तुलाना ॥	सतनाम	दरश परस इमि सब कोई जावे । बहु विधि जामा सन्धि नहिं पावे ॥	सतनाम	येहि विधि रैनि दिवस बितजाई । आपन दफा रहा बटुराई ॥	सतनाम
सतनाम	आपन तेज करे प्रकाशा । नर-नारी सब खावहि त्रासा ॥	सतनाम	ऐसन जाल भ्रम दे डारी । कर्ता छोड़ न और विचारी ॥	सतनाम	जो मैं कहु सो करहु विचारा । थोड़ा अनाज इमि करहु अहारा ॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
एक	एक	रोटी	सब	कहं	दीजै । लोन	विजन
दोनों	दूर	कीजै ॥	कोई	नींद	सोवे	जन
जाई ।	ऐसन	बुद्धि	जो	रचा	उपाई ॥	तुमं
हू	छीर	पीवहु	जन	नीती ।	कहो	वचन
मानो	परतीती ॥	हमके	नित	पकवान	बनाई ।	येहि
विधि	सारधा	हमके	आई ॥	साखी - १८	मम	चिन्हो
यह	प्रपंच	सब,	जाल	दीन्ह	इमि	डारि ।
मोह	भ्रम	होय	आवहि,	बोलयो	वचन	सम्भारि ॥
चौपाई	मम	महल	में	क्षीर	बहुता ।	हुकुम
हुआ	डारहूं	तुम	सुता ॥	दही	दूध	हजूरे
लीन्हा ।	इन्तो	बात	अवर	कुछ	दीन्हा ॥	अनवा
डारहू	भर	पेट	जाई ।	ज्ञान	गमि	महं
रहौ	समाई ॥	छापा	छीन	अदल	किमहिं	होई ।
जोगी	नाहि	रोगी	है	सोई ॥	ऐसन	हुकम
साबह	कह	दीन्हा ।	सतपुरुष	कहं	निश्चय	चीन्हा ॥
यह	प्रपंच	काल	इमि	कहई ।	झूठी	बात
साधु	नहिं	अहई ॥	होखो	ज्ञान	मोह	के
छेके ।	निकट	बात	दूर	ले	फेके ॥	अपनहिं
काल	इमि	करे	निमेरा ।	मन	कीन्हो	इमि
सब	घट	डेरा ॥	ऐसन	झीन	जाल	यह
डारे ।	अगम	निगम	इमि	कथा	विचारे ॥	फिर
मम	भिरेऊ	ताहि	सो	जोई ।	कीन्हो	झगड़ा
बहुत	बनाई ॥	अग्नि	बाण	छोड़ा	तुम	आई ।
ममता	बेइली	तुम्हें	लपटाई ॥	साखी - १९	ममता	मद
भ्रम	तेजहु,	सुन	निज	वचन	हमारी ।	काल
प्रचण्ड	घट	में	बसे,	ऐहि	विधि	बात
बिगारी ॥	छन्द	तोमर - ४	अकूफ	मम	तुम	लीन्ह,
जो	प्रथमे	दर्शन	दीन्ह ॥	दे	दरश	भयो
निरन्त,	इमि	समझ	पिछला	मन्त ॥	इमि	कहत
हो	निरुवारी,	वह	जमा	दीन्हो	डारी ॥	तुम्हें
प्रीति	पिछली	नेह,	इमि	भ्रम	भूलो	देह ॥
ले	सत	सुकृत	साथ,	मम	अदल	करेवो
सनाथ ॥	यह	तखत	पक्का	फेरी,	सागिन	देओ
सब	घेरी ॥	12	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
यह	जगत	करेऊ	हजूर,	मम	मान	वचन ही फुर ॥
गज	तुरे	बांधो	द्वार,	तुम	मान	वचन हमार ॥
अबदुल्लाह	दुखा	तुम्हें	दीन्ह,	इमि	मया	सब छेक लीन्ह ॥
लेहु	अन्न	कपड़ा	साथ,	सब	जगत	कर दो हाथ ॥
तुम	दर्द	मम	भव सोच,	सब	दुःखा	फरिहो मोच ॥
नहिं	काल	करुणा	जानि,	इमि	दुःखा	दीन्हो आनि ॥
सब	जगत	करते	सुख,	इमि	परा	तुम कहं दुःख ॥
जब	चले	पगु	इमि डारि,	इमि	काल	बोल सम्भारि ॥
जन	जाऊ	वाके	पास,	सत	लोक	करहु निवास ॥
छन्द नराच - ४						
वचन	हमारा	रहु	विचारा,	मम	करतारा	तुम गृह आई ।
यह	संसारा	सकल	हमारा,	वारे	पारे	छवि छाई ॥
अदल	फेरो	मम	कालहिं	घोरो,	जेर	करो नहिं फेर आई ।
जुगति	बताओ	जीप	मुक्ताओ,	तीन	ताप	नहीं तन ताई ॥
सोरठा - ४						
सुन निजु वचन हमारी, मन तुममें संसृत रहे ।						
देहुं कुमति सब डारी, मम वचन सुन लीजिए ॥						
चौपाई						
भयो	उदास	दिल	बहुत	बैरागा ।	यह	तो वचन कुबुद्ध है कागा ॥
उठ	के	इमि	दरवाजा	गयेऊ ।	बहुत	सोच तब दिल में भयेऊ ॥
दल	कहा	झगड़ा	काहे	कीजे ।	साहब	वचन मान के लीजे ॥
उन	कहं	लेई	देवढ़ि	बैठेऊ ।	हमके	छोड़ धर किमि कर गैऊ ॥
हुकुम	सदा	राखब	कर	जोरी ।	उनकर	वचन करब नहिं भोरी ॥
ऐसन	होहहिं	किमि	कर	बाता ।	यह	वचन नहीं हृदये राता ॥
वजीर	दास	के	हम	कह दीन्हा ।	छरि	दार हम तुम कहं कीन्हा ॥
इतना	कही	मम	वहां	जाई ।	जहां	सयन यह सेज बनाई ॥
जब	मैं	कह	न	लीन्हो	कछु	बाता ।
जाके	तुम	बीरबल	यह	कहई ।	ताकी	बसती कहवा अहई ॥
शैल	करन	पश्चिम	के	गयऊ ।	इमिकरि	दीन बहुत गत भयऊ ॥
13						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २०			
सतनाम			बालक एक ब्राह्मण के, माया तेजिसि परचारी। ताके संग है बीरबल, कहो वचन निरुवारी॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			तब उन्हीं कहा नाम सुन पाओं। करो विचार तो फेर ले आओं॥ कोकिल दास मनि है नाऊँ। तीनऊ जना गये एक ठाऊँ॥ है वह पण्डित ज्ञानी ज्ञाता। भक्ति भाव चित बहुते राता॥		सतनाम	
सतनाम			त्यागेवो माया औ गृह नारी। सबे त्यागी निज भक्ति सुधारी॥ आया नहीं मम दिल है लागा। अहै सन्त वह प्रेम सुभागा॥ इमि करि वचन बोलत तब भयऊ। इमि करि यहां फेर ले अयऊ॥		सतनाम	
सतनाम			सुनके सीरीरी करन तब लागा। फेर फार करे इमि कर जागा॥ करे निमेरा ज्यों करतारा। अति प्रचण्ड कहे जगत हमारा॥ सबके रूजु करो इमि पासा। मानहू इमि सन्त विश्वासा॥		सतनाम	
सतनाम			दरवाजे बाहर काल वोए अहई। हम सो दरशन इमि करि चहई॥ मम तो सुकृत लीन्हो साथा। तुम्हे जगमें करो अनाथा॥ पिता-पुत्र हम एक मत भयऊ। चार युग का कागज कीयऊ॥		सतनाम	
			साखी - २१			
सतनाम			चार युग जहड़ाईयां, अब किमि जाइयो भागि। मुशुक चढ़ायो बाध के, हमसे कीन्हो लागि॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			नीरालेप कहि वचन सुनावे। दे प्रतीत काल गुण गावे॥ राखत बने ना खोदा जाई। अपने दिल में राखा छपाई॥ अन्तर बात बुझके लीन्हा। किमि कर दिल में दुविधा कीन्हा॥		सतनाम	
सतनाम			तुम अस ज्ञानी जग नहिं अहई। कुमति बात यह किमि कर लहई॥ मन तुम में इमि करत है बासा। नाच नचावे अजग तमाशा॥ पीछे दर्शन तुम कर दीन्हा। चीन्हत-चीन्हत तुम उनकहं चीन्हा॥		सतनाम	
सतनाम			कई दिवस रहे तुम पासा। चीन्ह पड़े तब भये उदासा॥ इमि कर गोप गुप्त भए गएऊ। वह लीला इमि करबनि अयेऊ॥ तब मम उठि तखत पर गयऊ। ज्ञान विचारन दिल में ठयऊ॥		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अमर लोक में पूछत भयऊ। देखो बचन कवन वोए कहेऊ॥	सतनाम	छपलोक शून्य छोड़ आये। किमि काहु चौकी बैठाये॥	सतनाम	साखी - २२	सतनाम
सतनाम	छपलोक में कौन है, तुम हृद पर दीन्हो पांव।	सतनाम	यहां वहां सब एक है, दुविधा कीन्हो भाव॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	मन संधी यह तुम में आई। पूछन लागे वचन चतुराई॥	सतनाम	छोड़े भवन गमन करी जाई। राखो तेहि रखावार बनाई॥	सतनाम	जब तुम छोड़ शैलके जाई। यहां राखो रखावार बुलाई॥	सतनाम
सतनाम	तैसे मम सौंप काहु कहं दीन्हा। पीछे जगत पयाना कीन्हा॥	सतनाम	साहब मम अकूफ के दीन्हा। सोई वचन हम निश्चय चीन्हा॥	सतनाम	कई कर्ता जो जगत में आवे। कर प्रपंच बहुत गुन गावे॥	सतनाम
सतनाम	सतपुरुष है निर्मल ज्ञाता। मम मानेउ निज उनकर बाता॥	सतनाम	मम नहीं भूले गैर नहीं भयऊ। उज्जवल दशा हंस गुण गहेऊ॥	सतनाम	भाव निर्मल जेहि ज्ञान पुनीता। कुन्दन कनक प्रेम नैनीता॥	सतनाम
सतनाम	हीरा हीरम्बर ब्रह्म सो भयऊ। कुबधा काग करम नहीं अएऊ॥	सतनाम	जो जन हमसे कीन्हीं प्रीती। निर्मल भयो तेहि जम नहीं जीती॥	सतनाम	तब दिल में ऐसन मैं ठयऊ। सूरत मोरि पश्चिम के गहेऊ॥	सतनाम
सतनाम	साखी - २३	सतनाम	सूरत बहुत उदास भयो, किमि कर आवहिं पास।	सतनाम	यहां कफा बहु व्यापियां, हृदय सुन हो दास॥	सतनाम
सतनाम	छन्द तोमर - ५	सतनाम	मम सुरति भयो प्रकाश, इमि पहुंच दासन पास॥	सतनाम	वहां मंत सब मिल कीन्ह, इमि ध्यान धारु लौलीन॥	सतनाम
सतनाम	एहि रैन करिये जोग, कुछ देखा बिमल बिरोग॥	सतनाम	सोवत जागत मंत, इमि निगम अगम निरन्त॥	सतनाम	इमि भोर भाव सब जाग, इमि कहन सब मिल लाग॥	सतनाम
सतनाम	इमि बोले बचन बिचारी, सब कहे इमि निरुवारी॥	सतनाम	बोले कोकिल वचन सुढंग, मम रहेवो साहब संग॥	सतनाम	इमि दुर्बल देखो शरीर, कुछ कष्ट है तन पीर॥	सतनाम
सतनाम	15	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
इमि	भयो	ऐसन	रंग,	कुछ	कष्ट	गुन है संग ॥
इमि	भयो	सबहिं	उदास,	किमि	जाहि	सतगुरु पास ॥
यह	जाल	झेलत	रंग,	इमि	विधि	कौतुक रंग ॥
मन	अटक	घटहिं	बास,	नहिं	होन	देत उदास ॥
दिन	बीते	कछु	जब	जाय,	इमि	चले सूरत लगाय ॥
इमि	धीर	धर	कर	ज्ञान,	इमि	सूरत सांझ बिहान ॥
इमि	कर	विवेक	विचार,	जब	जाहि	सतगुरु द्वार ॥
छन्द नराच - ५						
सूरत	विचारा	करे	उचारा,	चरण	कमल	दल कब पाई ।
होत	उदासा	दिल	प्रकाशा,	दास	सदा	हम पतिआई ॥
सतगुरु	ज्ञानी	मम	पहिचानी,	मानी	हृदय	तत लाई ।
सूरत	उदासा	मम	तुम	दासा,	दरशन	को गुन फल गाई ॥
सोरठा - ५						
सब मिल चले तुरन्त, शैल करत वही जाइये ॥						
करे विवेक निरन्त, निर्मल ज्ञान चित में बसे ॥						
चौपाई						
हम	कहं	देखि	बहुत	उदासा ।	तब	इमि बोले वचन प्रकाशा ॥
हम	कहे	मंदिर	देव	सँवारी ।	नूतन	नया सेज तहां डारी ॥
यहा	ज्ञान	ग्रन्थ	तुम	करो पसारा ।	बिमल	प्रेम भक्ति निज सारा ॥
सुने	तेहि	जाय	सुनाओ ।	भक्ति	भाव	प्रेम पद गाओ ॥
उठेहु	सब	मिल	इमि	करु कामा ।	जाय	बनावहुं सुन्दर धामा ॥
तब	मम	कहा	धूप	बड़ अहई ।	परेशान	लोग यह कहई ॥
धीर	धरो	मम	देब	बनाई ।	शरा	जाम के देओ छवाई ॥
ऐसन	गर्ज	कोप	कर	बोला ।	वचन	हमारी है अनमोला ॥
जो	मम	कहा	धोखा	तुम डारी ।	करसी	काल दीन्ही सब गारी ॥
अवहि	सब	मिल	जाय	बनाओ ।	एको	घड़ी विलम्ब न लाओ ॥
शुक्रवार	कहे	यहां	बुलाई ।	सबके	कहो	बनावहि आई ॥
साखी - २४						
सुनो श्रवण सब प्रीत करि, इमि मैं कहो विचारी ।						
लघु दृघ मिल लागिऐ, मन्दिर लेहु सँवारी ॥						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सब जना मिल जमा तब भयऊ। काम करन के सब मिल धयऊ॥	सतनाम	अति प्रचण्ड अखाण्ड समीरा। दीन मनि दीन दुखित तन पीरा॥	सतनाम	हमके कहवो तुम कीन नहिं गयऊ। यहां बैठ प्रपंच बनयऊ॥	सतनाम
सतनाम	उठेव क्रोध करि इमि पग ढारी। पीछे से आय चढ़री सिर डारी॥	सतनाम	बना भवन मन भव खुशहाला। बोला प्रेम करी वचन रिसाला॥	सतनाम	दीन्ह मनि दीन बहु विनय विचारी। कोपा कर्ष दीन्ह बहु गारी॥	सतनाम
सतनाम	तब मम कहा काल है सांचा। याते कर्म कछु और नहिं बांचा॥	सतनाम	मन मतवाला जम बड़ दारुण। तेज अमृत पीसे इमि बारुण॥	सतनाम	तब मम कीन्ह जंग बहुझारी। दापेयो तेहि गर्व अहंकारी॥	सतनाम
सतनाम	सब दाससन इमि कहा विचारी। क्षमा कीजे यह क्रोध विकारी॥	सतनाम	साखी - २५	सतनाम	राखे दिल महा गोप करी, प्रगट कियो नहीं जानि।	सतनाम
सतनाम	अब तो चरित्र बिचारो, करौ नीके पहिचानि॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	रैन बिते वासर चलि अयऊ। सब मिल उठ निकट चल गयऊ॥	सतनाम
सतनाम	बोले वचन इमि कहा सुधारी। छावहु मन्दिर तत बिचारी॥	सतनाम	उठे सबन मिल कीन्ह उपाई। धाय धूप सब विहित बनाई॥	सतनाम	बहे पवन बहुते झकझोरी। हृदय कमल सुखी वारि ना बोरी॥	सतनाम
सतनाम	बिन जल कमल सूखे भव हीना। धूप तवे भव अधिक मलीना॥	सतनाम	भये ज्जन जन बहुत वियोगी। सुख नहिं सागर दुःख सब रोगी॥	सतनाम	आये निस निश्चय तब भयऊ। थाके सब मिल थै पर रहेऊ॥	सतनाम
सतनाम	दल ने अर्ज कीन्ह सिर नाई। हुकुम करो मम गृह के जाई॥	सतनाम	शक्ति आस पास किमि जाई। बोला बैन बहुत रिसि आई॥	सतनाम	लघु बहु वचन कहत नहिं शंका। इमि प्रपंच काल बड़ बंका॥	सतनाम
सतनाम	उनको तपत बहुत तन आया। अति असाध कुछ गम नहीं पाया॥	सतनाम	साखी - २६	सतनाम	तब मैं उठेऊ रोस करी, डाटो बहुत सम्हारी।	सतनाम
सतनाम	जाहु-जाहु गृह आपने, काल रहा तब हारी॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	मेहरबान के नित्य बुलावे। बहुत प्रीत करि राग गवावे॥	सतनाम
सतनाम	छेकिस अन्न कोई खाय न पावे। बहुत कष्ट आत्म दुःख आवे॥	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	17	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
रैन सोवहु जनि जागहु राती। येहि विधि काल कीन्ह उत्पाती॥						
हृदय दर्द दया अस भयऊ। तुम गृह जाहु यहां क्या अयऊ॥	सतनाम					सतनाम
तब मम भेद जो कहा विचारी। झगड़ा बड़ है किमि निरुवारी॥	सतनाम					सतनाम
तब वह गये महल पग डरी। रैन रहे फिर यहां सिधारी॥	सतनाम					सतनाम
कंद मूल मम करो अहारा। देहु मंगाय वचन यहां सिधारी॥	सतनाम					सतनाम
कंद खाय तन होय निरोगा। तब इमि होईहैं निर्मल जोगा॥	सतनाम					सतनाम
कंद के दिन बीत तब भयऊ। मिलना मुश्किल किमि कर कहऊ॥	सतनाम					सतनाम
कंद खाय जोगी जग अयऊ। तुम कर्ता कि कृतम भयऊ॥	सतनाम					सतनाम
पुरुष निरोग जोग नहीं जाना। विमल विरोग सत पहचाना॥	सतनाम					सतनाम
साखी - २७						
बोला बचन अति क्रोध करि, कम्पित भय नर-नारी।						
उत्पति प्रलय हाथ मम, दिहिसी भ्रम सब डारी॥						
छन्द तोमर - ६						
इमि कहऊ तोमर छन्द, इमि ज्ञान गुण नहिं मन्द॥	सतनाम					सतनाम
ओय पुरुष निर्मल अंग, यह कथत विविध तरंग॥	सतनाम					सतनाम
वह निरालेप अमान, यह निर्गुन को प्रवान।	सतनाम					सतनाम
ओय मरण जीवन न साथ, यह उपज विनस अनाथ॥	सतनाम					सतनाम
ओय कर्म काल न पास, यह जम जबरा त्रास॥	सतनाम					सतनाम
ओय दया सिंधु अपार, यह त्रिगुण लीला धार॥	सतनाम					सतनाम
नहिं मात-पितु सुत नारी, सब भ्रम भाजन डारी॥	सतनाम					सतनाम
नहिं वर्ण भेद विरोग, नहिं गर्व गरुवा सोग॥	सतनाम					सतनाम
गुण अतीत अगम अथाह, यम जान वाही वाह॥	सतनाम					सतनाम
इमि काल जग प्रचण्ड, कथि कर्म जोग निखण्ड॥	सतनाम					सतनाम
प्रपंच बुद्धि विकार, मन माया को विस्तार॥	सतनाम					सतनाम
ओय अमर पुरुष अमान, नहीं करत पाठ पुरान॥	सतनाम					सतनाम
जाके जीवन जन्म है हाथ, होई सत सुमर सनाथ॥	सतनाम					सतनाम
मरनि अजर निर्मल सार, नहीं जन्म बारम्बार॥	सतनाम					सतनाम
जिमि हंस बिलगयो बुद्धि, इमि नीर-छीर सुबुद्धि॥	सतनाम					सतनाम
18						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द नराच - ६			
सतनाम	कीन्ह विचारा त्रिगुण पारा, वारे वारे सब रहीअंग॥	सतनाम	सिन्धु करारा इमि निधि सारा, सात सर्ग से भिन्न कहीअंग॥	सतनाम	नहीं दशरथ वारा जग अवतारा, धरनी धर नहीं सो कहीअंग॥	सतनाम
सतनाम	अवनि अकाशा जल थल बासा, चेतन ब्रह्म सदा लहीअंग॥	सतनाम	सोरठा - ६	सतनाम	मन माया है वीर, त्रिगुण तन सो व्यापिया।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	पुरुष है सत शरीर, आवागमन ते रहित है॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	कंद मूल सब खोजहीं जाई। रुजु करही सो पहुंचे आई॥	सतनाम	काल कुबुद्धि सुधि सब गयऊ। वाके वश में सब कोई भयऊ॥	सतनाम	माया मन यह फंद बनाया। जोग जुगत करि त्रास दिखाया॥	सतनाम
सतनाम	ऐसन शिरीरी सो कर धावे। दर के पेल केहु नहि आवे॥	सतनाम	बाहर हुए देखो सब कोई धन्य भाग दर्शन बड़ होई॥	सतनाम	कोई कहे कूप सो आये। कोई कहे स्वर्ग धिाये॥	सतनाम
सतनाम	धन्य-धन्य दर्शन जो पावे। इनकर लीला वर्णनी न आवे॥	सतनाम	देश कोस लही परिगव सोरा। दर्शन के सब करहिं निहोरा॥	सतनाम	कोई तड़ाक में खाक बनावे। कोई बाएं दहिने होय धावे॥	सतनाम
सतनाम	धन्य भगवान भक्ति सो आवे। नर-नारी मिल गुण सो गावे॥	सतनाम	यह विधि कौतुक काल जो करई। आपन लीला अपनही कहई॥	सतनाम	साखी - २८	सतनाम
सतनाम	ऐसन कौतुक काल के, कर्म भया प्रचण्ड।	सतनाम	ब्रत रहा तीन लोक में, सत द्वीप नौ खण्ड॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	मम दिल में दुविधा कुछ भयऊ। निकट आए इमि वचन सुनऊ॥	सतनाम	सुनहु वचन मम कहो विचारी। काल प्रचण्ड विविध विस्तारी॥	सतनाम	मोहम्मद शाह दिल्ली सुलताना। इन्ह प्रपंच वचन मम जाना॥	सतनाम
सतनाम	जोगिनी प्रचण्ड महल तेहि अहई। खापर सिर भरन सब चहई॥	सतनाम	शाहजादा मम तख्त जो कीन्हा। बेबाहा वचन इमि ताकहं दीन्हा॥	सतनाम	ताकर सिर सर देहु मंगाई। भारो खापर खुशी दिल आई॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नैनहिं देखेव श्रवण सुनि बाता। येहि विधि कर्म काल उत्पाता॥	सतनाम	गुरुवरदार छरि जब आवे। होय अकूफ निज बचन सुनावे॥	सतनाम	शाहजादा के तेजहु नाऊ। कहे फकीर अस वचन बनाऊ॥	सतनाम
सतनाम	हम तो तखत कबहि नहिं वैसे। अति अधीन दास गुण तैसे॥	सतनाम	अति गरीब गरूर नहीं कीजे। जो मन कहूं वचन सुन लीजे॥	सतनाम	साखी - २८	सतनाम
सतनाम	हजरत हाजिर हद पर, जाहिर जग प्रचण्ड।	सतनाम	वो सो वायेब जो चले, बांध लीन्ह तेहि दण्ड॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	जो तुम कहेउ श्रवण चित सुनेऊ। काल प्रचण्ड मम कुछ नहिं मानेऊ॥	सतनाम	सत्य पुरुष वचन अस कीन्ह विचारा। हाल हजूर ही ठीक करारा॥	सतनाम	दीन्ह तखत मम थय बैठाई। आदि अंत निज कथा सुनाई॥	सतनाम
सतनाम	तुम कारण मम जग में अयऊ। तुम्हें दुःख दीन्ह तब मैं धयऊ॥	सतनाम	दीप-दीप में देखेव जाई। जम्मू दीप जम अटक लगाई॥	सतनाम	कीन्ह निमेरा बन्द छुड़ाई। सहजादा सुनो चित लाई॥	सतनाम
सतनाम	बादशाह दुनिया के साथ। ताको कागज हमरे हाथा॥	सतनाम	वाके पूछिहो सुन सुलताना। दरिया अदब है फुरमाना॥	सतनाम	राखई अदब तेही फिर रखिहो। बिना अदाव फेर तेहि नहिं लेखिहो॥	सतनाम
सतनाम	तोड़िहो तखत बखत कहां पावे। शहजादा के दुखा जो दावे॥	सतनाम	ऐसन बोल वचन जो दियेऊ। सत्य वचन मम हृदय गहेऊ॥	सतनाम	साखी - २९	सतनाम
सतनाम	बेबाहा सतपुरुष है सत जो कीन्ह विचार।	सतनाम	और वचन जग मिथ्या, बहुविधि करे पुकार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	सुनके नख सिख इमिकर जागा। लघु बहु वचन कहन के लागा॥	सतनाम	हमहि बेबाहा काके कहई। धोखा बात काहे के लहई॥	सतनाम	जो मैं कहो करहू परवाना। काल प्रचण्ड करहिं पिसमाना॥	सतनाम
सतनाम	तन छूटे फिर छेकई आई। रोकि राह करि विविध उपाई॥	सतनाम	त्रिलोक है त्रिगुण देवा। कर्म कारल के जाने भेवा॥	सतनाम	अब दुलह सब कहे दीन्ह मचाई। मम अकूफ बिन ज्ञान न पाई॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	बहु प्रपंच रचा तुम बाता। काल कुबुद्धि तुम्हें तन राता॥	सतनाम	नाही विवेक विचार न करई। मम अमान तोहि चिन्ह ना परई॥	सतनाम	ममता मद्य यह तुम कह घेरे। रसना बैठ बात बहु टेरे॥	सतनाम
सतनाम	सरस्वती सरस है तुमरे पासा। घौंचत काल सब करें तमाशा॥	सतनाम	रखे ना थीर नीर ज्यों डोले। अर्ध घट कुम्भ चलत महं बोले॥	सतनाम	साखी - ३०	सतनाम
सतनाम	बहुविधि कहयो विवेक करि, कर्म नचावत नाच।	सतनाम	अगली पिछली बुझ के, मानो वचन यह साच॥	सतनाम	छन्द तोमर - ७	सतनाम
सतनाम	मम वचन मानो हीत, इमि चलो भवजल जीत॥	सतनाम	नहीं कहयो धोखा धंधु, दुर काल कुबुधा रंध॥	सतनाम	विवेक ब्रह्म अचिन्त, गहु पदुम पद यह नित॥	सतनाम
सतनाम	अविनाशी नाश न होय, यह ब्रह्म अविगत सोय॥	सतनाम	जब भव पुरानो थान, तब दूजा कीन्ह मनमान॥	सतनाम	तंतु यह गहीर गम्भीर, भव भटक लागू ना तीर॥	सतनाम
सतनाम	इमि हीरा हनो निहाय, मिजि जौहर जाहीर आय॥	सतनाम	जब किरण को छवि छाय, नहीं प्रकट ज्योति छपाय॥	सतनाम	यह ब्रह्म अजर अमान, नहि देह दर को ध्यान॥	सतनाम
सतनाम	नहीं मोह माया साथ, मम आपही आप सनाथ॥	सतनाम	गुण गहे निर्मल संत, मम दीन्हों अपनो मंत॥	सतनाम	अजर अविगत रूप, यह ब्रह्म सत सरूप॥	सतनाम
सतनाम	नहीं तरनी काठ कराल, कही खांड खारी माल॥	सतनाम	कही मोती मुक्ता ज्योति, कोई लाद कांच की पोती॥	सतनाम	वासन बहु प्रकार, कही घृत मधु है सार॥	सतनाम
सतनाम	छन्द नराच - ७	सतनाम	इमि लौलीना प्रेम न छीना, छन्न-छन्न वृगसे सो वानी॥	सतनाम	त्रिविध विकारा सब दुर डारा, डगमग कबही ना होय हानी॥	सतनाम
सतनाम	मम इमि प्रचण्डा कालहीं डंडा, जेहि डर खाय जगत जानी॥	सतनाम	जुग चार समेता कागज ऐता, प्रेम भये सबे जड़ प्राणी॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	21	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - ७			
सतनाम	फिरे	मही	सब	जानि,	तुम	अस
सतनाम	लेहु	वचन	मम	मानी,	करहु	विवेक
						विचारि
						के ॥
						चौपाई
सतनाम	किया	विवेक	विचार	बनाई।	हो	तुम
सतनाम	फीकी	बात	बकी	नहिं	आवे।	जोय
						रसना
						गढ़ी
						बहुत
						बनावे ॥
सतनाम	काज	इमि	पानी	मह	दीजे।	बिनस
सतनाम	झूठी	बात	मुठी	में	राखे।	हाथ
						पसारे
						क्या
						वह
						चाखे ॥
सतनाम	केशर	कर्ममर्म	नहिं	जाना।	बहुविधि	रंग
सतनाम					का	करे
						बखाना ॥
						भीतर
						ब्रह्म
						भेद
						नहिं
						पावे।
						बाहर
						कथा
						जगत
						समझावे ॥
सतनाम	तुम	प्रपंच	जो	रचा	बनाई।	काल
सतनाम						कुबुद्धि
						धारी
						धर्म
						छुड़ाई ॥
सतनाम	हरिचंद	मंद	नहीं	सतकर	भाऊ।	छल
सतनाम						बल
						बुद्धि
						छला
						तुम
						राऊ ॥
सतनाम	राजा	रानी	सूत	पुनीता।	दीन्हो	कष्ट
सतनाम						नष्ट
						तुम
						दुता ॥
सतनाम	राखाहिं	व्रत	सत	उन	ठानी।	प्रकट
सतनाम						भये
						फिर
						राजा
						रानी ॥
						साखी - ३१
						सो
						हम
						तुम
						कहं
						चिन्हिया,
						काल
						कठिन
						है
						भाव।
सतनाम	अब	प्रपंच	न	लागी	हैं,	कोटि
सतनाम						खेलहु
						जो
						दाव ॥
						चौपाई
सतनाम	इतना	सुने	हीन	तब	भयऊ।	जैसे
सतनाम						सरबस
						कोई
						हर
						लीयऊ ॥
सतनाम	भयो	मंद	अनध	बुद्धि	ज्ञाता।	प्रकट
सतनाम						कहे
						नहीं
						इमिकार
						बाता ॥
सतनाम	उठा	सहज	सरूपही	जाई।	पैठ	भवन
सतनाम						जहां
						सेज
						बनाई ॥
सतनाम	करत	गुनान	ज्ञान	तब	छूटा।	कटि
सतनाम						जाल
						मम
						यही
						नहीं
						लूटा ॥
सतनाम	दल	दास	आये	मम	पासा।	तब
सतनाम						हम
						कीन्ह
						ज्ञान
						प्रकाशा ॥
सतनाम	यह	तो	कठिन	काल	गुण	अहई।
सतनाम						दगा
						कीन्ह
						बड़
						हमको
						छलई ॥
सतनाम	विवरण	कीन्ह	हंस	गुण	जैसे।	नीर
सतनाम						छीर
						समेटे
						ऐसे ॥
सतनाम	कागा	कर्म	हंस	नहीं	रूपा।	कछिया
सतनाम						कर्म
						जो
						धरे
						सरूपा ॥
सतनाम	नहीं	यह	कर्ता	काल	प्रचण्डा।	सत्य
सतनाम						पुरुष
						वह
						ब्रह्म
						निखाण्डा ॥
सतनाम	यही	नहीं	गुण	ज्ञान	है	हाथा।
सतनाम						बिन
						गुण
						ज्ञान
						यह
						फिरे
						अनाथा ॥
सतनाम	इमि	बहु	वचन	जो	बुद्धि	उपाई।
सतनाम						पुरुष
						हाथ
						गुण
						घैच
						दिखाई ॥
						22
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३२			
सतनाम			कर्ता काल कहं चीन्हिये, गुण अवगुण विलगाय।		सतनाम	
			वह अमर यह जरा मरण में, इमि गुण कहा बुझाय॥			
			चौपाई			
सतनाम			दल कहा दगा बड़ भयऊ। एकर हाल कवन अब कीयऊ॥		सतनाम	
			करो क्षमा हम छेक जाई। करब बन्द काल चतुराई॥			
सतनाम			तब दिल में मम ऐसन कीन्हा। पैठ भवन में करो मलीना॥		सतनाम	
			संशय छेके दृढ़ होय जाई। पैठ काल सो करो लड़ाई॥			
सतनाम			तब मैं उठ भवन में गयऊ। जहां काल सुख सैन बनयऊ॥		सतनाम	
			ऐसा कर्म काहे तुम लीन्हा। सतपुरुष कर्ता कहि दीन्हा॥			
सतनाम			झूठ वचन तुम कहा बनाई। कलई के कर्म कला मह जाई॥		सतनाम	
			छलिये जा कहँ मर्म न जाना। जो नहीं ब्रह्म ज्ञान पहचाना॥			
सतनाम			तुम यह पाप आप सिर लियऊ। झूठी बचन काहे कहि दियऊ॥		सतनाम	
			झूठ कहे काल है सोई। अपने कर्ता मन तो होई॥			
सतनाम			अपने हाथ आप पगु मारा। उलट पलट यह बात बिगारा॥		सतनाम	
			साखी - ३३			
सतनाम			काल कर्म हम चिन्हया, विवरण कियो बनाय।		सतनाम	
			अब कहाँ तुम जाइ हो, साहब भये सहाय॥			
			चौपाई			
सतनाम			जोगिन एक अहै प्रचण्डा। तुम कहं चाहे सब विधि डंडा॥		सतनाम	
			खापर भारे भाव रस माती। मम कह सोच रहे दिन राती॥			
सतनाम			अहे प्रचण्ड काल बड़ भेवा। बांदिश सुर नर और सब देवा॥		सतनाम	
			तुम पर झपट करे बड़ जोरा। अति दाररुण जम जानहु चोरा॥			
सतनाम			तब मम तेज धारा प्रचण्डा। तोरो काल करो सत खण्ड॥		सतनाम	
			तुमके अदब अस देऊ दबाई। तोरो बुद्धि काल चतुराई॥			
सतनाम			अब बोलहु जनि इमि करि बाता चपेट चार देहुं तुमरे गाता॥		सतनाम	
			सिकुड़ गया अस भया मलीना। आपन कर्म आप व चीन्हा॥			
सतनाम			शूर साधी अस करे उपाई। सगुन विचारे मन चित लाई॥		सतनाम	
			जैसे नट नागर बड़ होई। कला करे वह लखो न कोई॥			
सतनाम			इन्द्रजाल की मर्म जो पाया। झूठ वचन जो साँच दिखाया॥		सतनाम	
			23			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३४			
सतनाम			सगुन साथ सब हाथ करि, होन चाहे करतार।			सतनाम
			शूर चंद कहा साधई, करे विविध विस्तार॥			
			छन्द तोमर - ८			
सतनाम			इमि नाशा श्रवण विचारी, मूदे चक्षु दृष्टि सुधारी॥			सतनाम
			ब्रह्मण्ड फिरे ओदारी, सब बात देहु बिगारी॥			
सतनाम			सतलोक करो पयान, मम वचन होहिं न आन॥			सतनाम
			मम जामा दिहो डारी, तुम बुझो बात सम्भारी॥			
सतनाम			टूक-टूक हद ही ओदारी, मम चलो बात बिगारी॥			सतनाम
			जला वृटि अगम अथाह, नहीं खोजत मिली है पाह॥			
सतनाम			त्रिय लोक करे उजारि, तुम कीन्हो हम से रारि॥			सतनाम
			तुझे कौन करिहैं उबारि, मम कहत बारम्बारि॥			
सतनाम			मम काल ही प्रचण्ड, इमि सात द्वीप नौ खण्ड॥			सतनाम
			दर दफा छेको जाय, छपलोक किमि तुम पाय॥			
सतनाम			सब करो भ्रम विरोध, किमि करो जग में बोध॥			सतनाम
			सब हंस हमरे हाथ, किमि करे जग ही सनाथ॥			
सतनाम			अब प्रकट भयो विचारी, सब कहतहुं निरुवारी॥			सतनाम
			किमि जंग हमसे जोर, तुम विधि कीन्हो शोर॥			
सतनाम			इमि सोवत सिंह उठ जागि, तुम जाहुं कहवां भागि॥			सतनाम
			छन्द नराच - ८			
सतनाम			सहदूल झपटा कुंजल पटका, सिंह निकट नहिं इमि आवे।			सतनाम
			जंगल झारा सबै सुधारा, जम दारुण नहीं सोधावे॥			
सतनाम			पर्वत खण्डा करो विहंडा, डगर साफ कर इमि जावे।			सतनाम
			पुरुष दुहाई होहिं सहाई, बिन सर धनुष तुझे दावे॥			
			सोरठा - ८			
सतनाम			सहजादा हूं साच, पुरुष दस्त सिर पर दियो।			सतनाम
			होहिं वचन नहीं कांच, पक्की बात बिगारिये॥			
			चौपाई			
सतनाम			रहा मौन मुख बात न अयऊ। तम मम निकल बाहर चली अयऊ॥			सतनाम
			छत्तीस वर्ष दिन गति भयऊ। आये काल दुःखा दारण दियऊ॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	बैठा चौक उखारण लागा। येहि विधि काल कीन्ह बड़ दागा॥	सतनाम	अब मैं सब सों कहों प्रचारी। अहे काल यह विषम विकारी॥	सतनाम	अब पर्दा दर खेल उधारी। अपने आपसे कीन्ह पुकारी॥	सतनाम
सतनाम	सबमें पैठा बुध विकारी। किमि बुझए जन बात हमारी॥	सतनाम	यही सोच रोच मम चिंता। सब कहिये नर वचन अनीता॥	सतनाम	अब मैं अपने आप सम्भारो। नर-नारी के फेर सुधारो॥	सतनाम
सतनाम	दिवस बीते रजनी चलि अयऊ। बाहर सब मिलि बैठत भयऊ॥	सतनाम	ठंडा फैंकत छिटिका अहेऊ। लघु बहु वचन ताही कहऊ॥	सतनाम	जागा दास के दिहिस गारि। एकर सिर इमि मार उतारि॥	सतनाम
सतनाम	<p>साखी - ३५</p> <p>बुद्धिमती अति प्रीत करि साहमति संग लाय।</p> <p>दस्त जोड़ कोरनिस किया, प्रेम प्रीत लौ लाय॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	देखात कोप शरीरहिं भयऊ। यह तो काल कठिन मत ठयऊ॥	सतनाम	जब मम तेज जो कीन्ह बहूता। सुन रे काल कीन्ह अजगुता॥	सतनाम	नर-नारी मिल धरहर कीयऊ। अदब दीन्ह तेहि इमकर भयऊ॥	सतनाम
सतनाम	दीन्ह तमाचा बहुविध जोरा। रहीं जमीं पर कीन्ह निहोरा॥	सतनाम	इमिकर शोर नगर में गयऊ। कर्ता छोड़ काल यह भयऊ॥	सतनाम	दल दास अस वचन उचारी। झगरा कीन्हो ज्ञान सुधारी॥	सतनाम
सतनाम	दलदास के इमि कही बाता। जोईनी संकट तुम किमकर ज्ञाता॥	सतनाम	वार पार है जन्म तुम्हारा। ऐसा गर्व जो कीन्ह अहंकारा॥	सतनाम	तुम जो जोयनी संकट में आये। क्तिम होय कर्ता कहवाये॥	सतनाम
सतनाम	तब मम सबसे कहा बुझाई। चौकी कीजे जाने नहीं पाई॥	सतनाम	पैठ दफा महं करहिं अन्दौरा। कठिन काल करिहै धनधोरा॥	सतनाम	<p>साखी - ३६</p> <p>याके पकरो जोर से, सूरसरि दीजो उतारी।</p> <p>प्रपंच रचि इमि पंथ में, यहि विधि कहा पुकारि॥</p> <p>चौपाई</p>	
सतनाम	सब घट सुरति काल के रहेऊ। जो मम कहेऊ कहे क्या भयेऊ॥	सतनाम	ऐसन चरित्र निरंजन किये ऊ। आनके चरित्र सो किमिकर लहेऊ॥	सतनाम	<p>25</p>	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जा	दिन	जन्मा	धरि	शरीर।	पैठ
सतनाम	आदि	अंत	कथा	सब	जाने।	अहे
सतनाम	त्रिगुण	तन	तो	सकल	शरीरा।	करे
सतनाम	परसराम	का	काया	बीच	अहई।	दस
सतनाम	परसराम	जन्म	जग	पहले	भयेऊ।	क्षत्री
सतनाम	कारण	बिना	कर्म	को	कियेऊ।	जमदग्नि
सतनाम	उनकर	पिता	नृप	ने	मारा।	सोई
सतनाम	सीया	स्वयम्बर	जबहिं	ठयेऊ।	राम	जन्म
सतनाम	परसराम	के	तेज	राम	पंह	गयेऊ।
सतनाम	साखी	-	३७	पुरुष	सबन	ते
सतनाम	त्रिगुण	सकल	शरीर	है,	ज्ञान	करो
सतनाम	चौपाई	परसराम	से	तेज	राम	बड़
सतनाम	कृष्ण	राम	सों	चौगुण	भयेऊ।	पूरन
सतनाम	जीव	सकल	जग	इमिकर	होती।	कहि
सतनाम	कहीं	ज्ञान	कहि	मंद	दिखावे।	कहीं
सतनाम	येहि	विधि	पवन	फिरंग	शरीरा।	लखे
सतनाम	जब	मम	हृदय	पर	प्रगट	भयेऊ।
सतनाम	घट-घट	काल	खोले	बहु	भांती।	सोवत
सतनाम	पुरुष	आए	दर्शन	जब	दियेऊ।	अधिक
सतनाम	घट-घट	खोले	सो	मम	जानी।	इमिकर
सतनाम	हमे	उन्हें	इमि	कारण	भयेऊ।	रजगुण
सतनाम	तेहि	घट	पट	में	पैठा	जाई।
सतनाम	साखी	-	३८	आदि	अंत	मम
सतनाम	इमि	प्रपंच	काल	गुण	भयऊ,	डारो
सतनाम	छन्द	तोमर	-	६	इमि	चीन्हो
सतनाम	इमि	ज्ञान	गुन	निरुवारी,	मम	चीन्हो
सतनाम	इमि	धोखा	धंध	न	होए,	निरंजन

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
इमि	बिलग	विवरण	जानी,	जो	नीर	छीर ही छानी ॥
मराल	मती	इमि	संत,	जेहिं	ज्ञान	गुण को मंत ॥
चीन्हु	चोर	चतुरा	काल,	इमि	कहाँ	वचन मराल ॥
भौ	भरम	डारवो	दूरी,	यह	मानु	वचन ही फुरी ॥
भौ	चेतन	ब्रह्म	बिराग,	इमि	चीन्हौ	कुबधा काग ॥
कहाँ	बाज	बटई	जोर,	इमि	उलटि	मारेवो चोर ॥
जब	जीव	सिंह	सरूप,	तब	कुंजल	कंदला चुप ॥
शहदूल	झपटे	आए,	तब	चंगुल	माह	समाए ॥
करु	ज्ञान	गमी	इमि	प्रीती,	सो	जात जमकै जीती ॥
मनहीन	छीन	अनंग,	कीन्ह	त्रिविध	तापहि	भंग ॥
सो	अटल	ब्रह्म	विराग,	निरलेप	निर्मल	जाग ॥
सुन	संत	सुधर	सयान,	सोई	हंस	बंस अमान ॥
परपंच	पांच	विकार,	गहु	मूल	महिमा	सार ॥
छन्द नराच - ६						
सुधर	सुजाना	इमि	पहचाना,	चीन्हा	कालहीं	सत कहीअंग ॥
नाहीं	अनीता	इमि	परतीता,	जीता	कालहीं	गुण लहीअंग ॥
जो	कोई	श्रोता	वचन	निरोता,	चेतन	चीत में सो कहीअंग ॥
गुण	बिलगाना	पुरुष	अमाना,	मन	परिचय	करी गुण लहीअंग ॥
सोरठा - ६						
मन परिपंच विचारी, इमि करी करो विवेक यह।						
सतगुरु सम सम्भारी, अब जन भूलौं भरम में ॥						
चौपाई						
काल	ध्यान	नर	धरिहहिं	कोई।	भरम	रहा छपलोक न होई ॥
भुक्ति	मुक्ति	साहब	के	हाथा।	दया	करहिं नर होई सनाथा ॥
सतगुरु	वचन	सुनो	इमि	ज्ञाता।	करहु	विवेक प्रेम रस माता ॥
शक्ति	बाल	लक्ष्मण	तन	लागा।	परे	मोह इमि किमि नहिं जागा ॥
हनुमान	संजीवन	आनि	पियाई।	भए	चेतन	चित इमि गुण गाई ॥
महीरावण	इमि	बांध	ले	गयेऊ।	जाए	पवन सुत प्रकट भयेऊ ॥
महीरावण	कर	भुजा	उपारी।	त्वचा	धुमाए	तहां दे मारी ॥
नाग	फांस	दोनों	अनुज	बधाई।	धाए	खगपति आन छुड़ाई ॥
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	उनके लघु केहु नहिं कहेऊ। निगम नेति स्तुति सब गहेऊ॥	सतनाम	मम तन मोह सो इमि कर भयेऊ। मम जाने सत पुरुष जो अयेऊ॥	सतनाम	दानव दैत्य काल बड़ अहई। करि परपंच आपन गुण लहई॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ३६	सतनाम	मोह फांस मम डारि कै, आप भया करतार।	सतनाम	काटे जाल सतपुरुष ने, इमिकर कीन्ह उबार॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	जहाँ-जहाँ जाल काल ने डारा। सतपुरुष इमि कीन्ह उबारा॥	सतनाम	तब मम कहे जग बड़ भयेऊ। कई दिन कर कसरत रहेऊ॥	सतनाम
सतनाम	तब मम कहा सुनहु रे संता। खबरदार होए रहो निरंता॥	सतनाम	मम आगे जब नींद में भयेऊ। उठी तुरन्त भागी तब गयऊ॥	सतनाम	हमके केहु नाहीं जगाई। सब घट काल जो रहा समाई॥	सतनाम
सतनाम	जब मैं उठा शून्य इमि देखा। सबसे बोले जो वचन सुलेखा॥	सतनाम	कब यह गया मरम नहिं जाना। तुम सब मिलके भरम भुलाना॥	सतनाम	गरज कहा मम जागत रहेऊ। भए उदास छेक नहिं सकेऊ॥	सतनाम
सतनाम	तेजादास के लिहिसि ले आई। जगादास मिली संग चलि आई॥	सतनाम	सब कर सुरत मन्द करि दियऊ। हमें जगावन किमि नहिं कीयऊ॥	सतनाम	धुनहीं सीर सब करहिं बखाना। उठ गए बड़ भौ अपमाना॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ४०	सतनाम	आई दौलत आपसो, आपहीं कीन्ह बिगार।	सतनाम	येहि सोच जड़ जानहि, कहा न मान हमार॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	नर-नारी सब भए उदासा। माया निरंजन अजब तमाशा॥	सतनाम	इमि करी सब मिलि बोलत भयऊ। राजपुर कैसो चलि गयऊ॥	सतनाम
सतनाम	नन्दा दास सो कहा बुलाई। तुम इमि कर पीछे चली जाई॥	सतनाम	लहठान कै दफा देखा उजियारा। वाकै दिल में बसै विकारा॥	सतनाम	मन प्रपंच फंद अस कीयऊ। विप्र एक पीछे से गयऊ॥	सतनाम
सतनाम	इमिकर वचन जो कहा बनाई। हुकुम हुआ लहठान ले जाई॥	सतनाम	नंदादास गर्मीं ज्ञान न कीएऊ। काल सुरत सब घट इमि छयऊ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	28	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जिमि करी वीचली कटि सब गयऊ। इमि कर दफा सबै छीत रहेऊ॥	सतनाम	बीता दिवस रैन चली अयऊ। बहुत सोच मम दिल में भयऊ॥	सतनाम	यह मन करता फंद अनन्ता। मचहीं बुद्धि यह जाए तुरन्ता॥	सतनाम
सतनाम	वजीरदास तुम करौ पयाना। राजपुर के जाहु ठीकाना॥	सतनाम	सबसे कहिहों वचन विचारी। अहे काल फंद बड़ डारी॥	सतनाम	साखी - ४१	सतनाम
सतनाम	इमि प्रपंच काल के, नहीं नीकै कहा बुझाए।	सतनाम	जिमि करी पौनहीं जो चंगही उड़ावै, डोरी टूटै पछताए॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	इमिकर मनही सभे अरुझयऊ। पूछत वचन आगे चल गयऊ॥	सतनाम	जो मम कहेउ वचन परवाना। हमके सब मिल कहे दीवाना॥	सतनाम	करता छोड़ काल अब कहेऊ। इनकर वचन कहत नहीं अयऊ॥	सतनाम
सतनाम	अब मम इमिकर रहेउ अकेला। नहीं कोई साथ संग नहीं चेला॥	सतनाम	तब काले अस रची उपाई। पलंग हमारी ले आवहु जाई॥	सतनाम	चला विप्र जो पहुँचा जाई। करी सलाम अस वचन सुनाई॥	सतनाम
सतनाम	कंद मूल पलंग उन कहेऊ। इमि कारण मम यहवां अयऊ॥	सतनाम	है वह काल मरम हम जाना। एक चीज नहिं देहुं अपाना॥	सतनाम	तब मम वोहि पूछत रहेऊ। कहो दसा वहवां कस भयऊ॥	सतनाम
सतनाम	वहां आनन्द मंगल है चारा। धन्य भाग आए करतारा॥	सतनाम	सारी नगर और दफा समेता। आनन्द मंगल बहु विधि हेता॥	सतनाम	साखी - ४२	सतनाम
सतनाम	ऐसन कौतुक नगर में, बेबाहा पुरुष अमान।	सतनाम	निसवासर सब जागहिं, पलकन्हिं करते ध्यान॥	सतनाम	छन्द तोमर - १०	सतनाम
सतनाम	इमि रैन पुहुम आनन्द, इमि पूरन शारद चन्द॥	सतनाम	इमि भाग भला भौलाभ, दे,। दरस दृष्टि सुआभ॥	सतनाम	जिमि साली सुखोवो मलीन, जल बरस पुहुमी दीन॥	सतनाम
सतनाम	जैसे तप्त तन में अंग, इमि चरचि चन्दन संग॥	सतनाम	ज्यों बहत शीतल समीर, इमि बोलत शब्द गम्भीर॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	29	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
धन-धन	कहो	नर-नारी,	ज्यों	कमल	सुखत	वारी ॥
पुहुप	वृगसी	सुबास,	इमि	भृंग	भावही	दास ॥
इमि	पदम	चरण	लुभाए,	नहीं	बीलगी	कतही जाए ॥
मन	मग्न	मधुकर	संग,	नहीं	त्रिविध	ताप अनंग ॥
एक	जात	बैठत	संग,	गुण	क्रित	कहे प्रसंग ॥
यही	भांति	लोभेयो	लोग,	सब	पूरण	ब्रह्म संयोग ॥
सब	धन-धाम	संवारी,	जो	दिए	तन-मन	वारी ॥
तेही	मुक्ति	पद है	जानी,	मम	वचन	करि पहचानी ॥
सब	लोगहिं	आनन्द	प्रीती,	अब	चलब	भवजल जीती ॥
सुखासागर	सर्व	आनन्द,	मेटि	दूरी	दुर्मति	द्वन्द्व ॥
छन्द नराच - १०						
भयो	आनन्दा	मेट	दुख	द्वन्द्वा,	दर्शन	के गृह इमि जाई ॥
पुरुष	अमाना	किन्ह	पयाना,	मन	माना	या पद पाई ॥
सब	मेटि	सोचा	पापहिं	मोचा,	चात्रिक	चित में बुंद आई ॥
प्रसाद	बखाना	जेहि	मन	माना,	मनसा	पूर्ण फल पाई ॥
सोरठा - १०						
आनन्द मंगल चार, भवन शोभे इहि भांति सब।						
करि मुख बैन उचार, भाग भला अब किमि कहि ॥						
चौपाई						
साथ	गए	नर भ्रम	भुलाना।	किमि	नहिं	वचन किन्ह प्रवाना ॥
हम	दिल	ऐसन	किन्ह	विचारा।	काले	सब विधि किन्ह हंकारा ॥
हम	तो	एक	हैं	काल	अनन्ता।	अब मैं पहुंचु जाए तुरन्ता ॥
रजनी	रंग	वेगि	चल	भयऊ।	मन	औ रंग विचार न कियऊ ॥
आदि	अन्त	निरंजन	जोगी।	शक्ति	मिले	भव आप संयोगी ॥
सो	घट	पैठी	प्रगट	यह	आया।	आसन कसी बसी जोग दृढ़ाया ॥
अस	प्रपंच	मचे	वह	बाता।	एक	सो अनन्त सबहीं घटराता ॥
मगु	मैं	पगु	धरि	करो	विचारा।	सब घट मत वोय आपन डारा ॥
आए	नगर	निकट	नियराई।	गया	विप्र	सो संग चलि आई ॥
मत	मैं	रचा	सुनो	चितलाई।	यहि	विधि भीड़ो काल सो जाई ॥
जो	मैं	सब	कर	करो	बटोरा।	पैठ रहा घट इमि कर चोरा ॥
30						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४३			
सतनाम			आयो रजनी निकट में, विकट काल बरजोर।		सतनाम	
			करो समर तहां सम्भल कै, सिर पर साहब मोर॥			
			चौपाई			
सतनाम			दुर्जन दल में लेंव जगाई। तब सनमुखा सूर सांगी गहिलाई॥		सतनाम	
			ओझा आधार झांक तहं जाई॥ मम निज बात जो देई जनाई॥			
			हो तुम कौन जो थै हो दीन्हा। मम मन्दिर मह बैठक कीन्हा॥			
सतनाम			तब वह कोपा उन्हें भय भयऊ। हट के पांव पीछे चलियऊ॥		सतनाम	
			तव मम त्रिछन तेज होए चलेऊ। हठ के पांव पीछे चलियऊ॥			
			छोड़ भवन बाहर वह गयऊ। बहुर लोग फेर-फेर लयऊ॥			
सतनाम			थैपर आन थिर तब कीएऊ। बहु भातिन्ह तव तेहि समझयऊ॥		सतनाम	
			बेबाहा हम तुम कह जाना। किमि कर भय तुम उनकर माना॥			
			तब स्थित चित थीर वह भयेऊ। एहि विधि कर्ता सब मिल कहेऊ॥			
सतनाम			भया शोर लोग सब धाए। पाव पकर हमके बैठाए।		सतनाम	
			सब मिलि पूछै कौन यह अहई। यह निज अर्थ हमसे कहई॥			
			साखी - ४४			
सतनाम			त्रिगुन रूप शरीर धरी, अहै निरंजन वीर।		सतनाम	
			वाघट पैठ डेरा कियो, कोई बुझे मति धीर॥			
			चौपाई			
सतनाम			तब सब घट में इमिकर पैठा। पवन फिरंगी सब दिल ऐठा॥		सतनाम	
			सत सुकृत की छुट गई बाता। आए निरंजन सब सुख दाता॥			
			मम कह सब मिलि बोधन लागे। सब घट पैठ काल इमि जागे॥			
सतनाम			हम को ले सब दर महं गएऊ। पलंग बिछाए सेवा बहु कएऊ॥		सतनाम	
			बासर बीत रजनी जब आई। बाहर थै निज दिन्ह बनाई॥			
			गरज उठे अस करे हंकारा। एही विधि काल कथै बरियारा॥			
सतनाम			वाके वचन सबन मिल रोपा। तब मम तेज क्रोध होय कोपा॥		सतनाम	
			पूर्ण ब्रह्म पुरुष जान आपे। सुनि वचन मम सब कोई कांपे॥			
			हमके वाके देऊ भिड़ाई। यही दर कोई छेके नहिं आई॥			
सतनाम			वह वीर मम वीर न अहई। मारो धाय के जमीं पर रहई॥		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	31	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साहब	सुनै	वचन	हमारी।	वह	प्रपंच	बड़ देखिए भारी॥
सन्मुखा	होत	कवन	दहु हारे।	होए	युद्ध	सब बात बिगारे॥
साखी - ४५						
झण्डे	कहा	विचार	के,	बुझै	बात	हमार।
जो	आप	निरंजन	देव है,	तब	दुजा	अहै करतार॥
चौपाई						
ऐसा	बोले	गरज	कर बाता।	मारों	काल	करो उत्पाता॥
देखात	शंका	सब	कह अयऊ।	अचरज	बात	अचम्भा भयऊ॥
तब	मम	सुरत	अगम मह	गयऊ।	अगम	कथा निरलेप सुनयऊ॥
सुनहु	वचन	मम	कहो विचारी।	आदि	अन्त	इमि कथा सुधारी॥
प्रथम	निरंजन	हद	पर अयऊ।	छप	लोक	के नीचे रहेऊ॥
बहु	प्रपंच	वचन	यहां डारी।	पुरुष	नाम	उन्ह दीन्ह बिसारी॥
ऐसा	किन	माया	सो संग।	त्रिविध	तीन	गुण अतीत अनंगा॥
शक्ति	रूप	छवि	छेके सरूपा।	छपाय	दिन	छपलोक अनूपा॥
स्वर्ग	पताल	महि	मण्डल राता।	तीन	लोक	महं अपनहिं ज्ञाता॥
सतपुरुष	अस	बोले	वाणी।	यह	छल	किन निरंजन जानी॥
सुत	भव	काल	क्रम उन कीन्हा।	तीन	लोक	महं परचे दीन्हा॥
भ्रम	स्वरूप	रूप	अस भयऊ।	कर्म	काल	तन इमिकर छयऊ॥
साखी - ४६						
सेवा	करि	कर्ता	भया,	दीन्ह	वचन	तेहि जानि।
छल	से	सब	कह छेकिया,	करे	जीवों	की हानि॥
छन्द तोमर - ११						
मम	कहत	हों	समझाय,	जोग	जीत	सुनु चित लाए।
तुम	हंस	बंस	सरूप,	मम	कहत	बचन अनूप॥
सुन	सुकृत	सत	को भाव,	इमि	कहत	सब गुण दाव॥
तीन	लोक	वाके	दिन,	वह	भयो	हमसे भिन्न॥
गरूर	गर्व	जो	कीन्ह,	बहु	बात	में परमीन्ह॥
छल	कीन्ह	चतुरा	चोर,	जीव	धौंच	अपनी ओर॥
इमि	वेद	विद्या	चार,	गुण	कहत	अगम अपार॥
32						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नहिं	पुरुष	दूजा	कोए,	यह	जगत	हमसे होए ॥
मम	शक्ति	प्रकट	कीन्ह,	तीन	देव	इमि रच लीन्ह ॥
मम	आदि	अन्त	है बीर,	इमि	बसों	जल थल नीर ॥
सब	परलय	उत्पति	साथ,	मम	नरक	स्वर्ग है हाथ ॥
अस	भ्रम	भाजन	भाव,	वह	खोले	अवगति दाव ॥
तीन	पूर	परचे	कीन्ह,	कोई	रहत	नाहिं भीन्न ॥
त्रिदेव	ते	छल	कीन्ह,	इमि	थापन	कर लीन्ह ॥
अब	बुद्धि	भव	गुण	हीत,	सब	मान वाहि प्रीत ॥
छन्द नराच - ११						
सुन	सुत	हमारा	करो	विचारा,	सर्व	भेद तुम से कहिअंग ।
काल	पसारा	सब	संसारा,	वार	वार	सब जीव दहिअंग
वचन	हमारा	करू	उपकारा,	धर्म	धीर	से इमि भीड़अंग ।
तुम	सुकृत	साथा	करो	सनाथा,	हाथ	देय तुम पर रहिअंग ॥
खोरठा - ११						
तुम प्रकट धरो शरीर, जाय भिड़ो इमि काल से ।						
मान सरोवर तीर, जहां निरंजन देव है ॥						
चौपाई						
भयो	सलाह	सलाम	जो	कीन्हा ।	सहज	दीप सहज कह लीन्हा ॥
हमरे	साथ	चलो	तुम	भ्राता ।	देव	निरंजन जग उत्पाता ॥
समर	करो	मम	उससे	जाई ।	तुम	साथ कुछ करो सहाई ॥
दीजै	निकाल	कौल	नहीं	राखा ।	सत	पुरुष वचन अस भाखा ॥
पुरुष	भोजा	मैं	गयो	तुरन्ता ।	माया	फंद सब रचिसी अनन्ता ॥
जब	मैं	भिड़े	व भ्रम	दे डारी ।	अनल	समान बाण भव कारी ॥
हारि	बारि	में	चले	उपराई ।	बहुर	उलटि फिर छेके आई ॥
बहु	प्रकार	मैं	कीन्ह	विचारा ।	एको	बाण न लागु हमारा ॥
सब	विधि	हमका	कीन्ह	मलीना ।	तब	हम हारि वचन इमि दीन्हा ॥
हमसे	कबे	भीड़	हु ना	आई ।	लीन्ह	लिखाय वचन चतुराई ॥
तब	मम	सहज	दीप	चल	अयऊ ।	मम लाज नहीं मुंह दिखायऊ ॥
अन्तर्यामा	पुरुष	कर	नाऊ ।	खोज	कीन्ह	हमरे पह आऊ ॥
33						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४७			
सतनाम			आदि कथा और अंत ले, सब कुछ कहा विचार।			सतनाम
			पुरुष सुना चित हित दे, यह निज वचन हमार॥			
			चौपाई			
सतनाम			दया निधि दया बहु कीन्हा। सहज दीप हम बैठक कह दीन्हा॥			सतनाम
			काल से कौल हारि मैं आई। अब किमि कर करिहो प्रभुताई॥			
सतनाम			हंसि के सुकृत बोले बाता। काल से कौल कीन्ह किमि भ्राता॥			सतनाम
			जन भीड़ऊ जानि जाहु पराई। संग संग कौतुक तो देखो जाई॥			
सतनाम			ठाढ़ होइहो सरवर के तीरा। हार जीत देखिहो दोनों वीरा॥			सतनाम
			चलि भव साथ हाथ दे भ्राता। बोलत बैन प्रेम निज राता॥			
सतनाम			आये निकट तट सरवर तीरा। उठा गरज निरंजन वीरा॥			सतनाम
			तुम किमि सहज आए इमि साथा। हमसे कौल लिख दीन्हों हाथा॥			
सतनाम			सहज दीप मम लेऊ छुड़ाई। फेकू धुमाए ठवर नहीं पाई॥			सतनाम
			ना हम लड़ब भिड़ो रहिं भाई। हार जीत देखो प्रभुताई॥			
सतनाम			जोग जीत धीरज धरु धीरा। आए के प्रकट निरंजन वीरा॥			सतनाम
			अग्निबाण छोड़ गहराई। मानो गरज छटा चहुं छाई॥			
सतनाम			हमको लेप कछु नहीं भयऊ। बांए दहिने इमि चलि गयऊ॥			सतनाम
			साखी - ४८			
सतनाम			अति प्रचण्ड अखण्ड जन, खण्डन चाहे शरीर।			सतनाम
			पुरुष प्रताप मम पोरुष, हार रहा बलवीरा॥			
			चौपाई			
सतनाम			फिर यह सम्भल आया मम पासा। दाविस करद्वै कीन्ह तमाशा॥			सतनाम
			फेकें धुमाए शून्य में गयऊ। शून्य से उलट जमीं पर अयऊ॥			
सतनाम			हंसि के बोला वचन चतुराई। हम तुम भए बरोबर भाई॥			सतनाम
			प्रेम जुगती बोले निज बाता। छोड़े युद्ध किमि करिए घाता॥			
सतनाम			भ्रातहिं भ्रातहिं कौन लड़ाई। अब मिलिए निज अंग लगाई॥			सतनाम
			तीन लोक उन्ह हम कहं दीन्हा। यह प्रपंच पीछे क्या कीन्हा॥			
सतनाम			सकलो दीन्ह जगत को भारा। यह छल देखो पुरुष व्यवहारा॥			सतनाम
			हम कहं तुम कहं दीन्ह भिड़ाई। दोनों लड़ाई खण्डित होइ जाई॥			
सतनाम			हम तुम मिलि जुल मण्डीए देशा। सहज जाए इमि कहही सन्देशा॥			सतनाम
			34			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मम दृग तुम लघु हो भ्राता। तुम सो प्रेम करो सत बाता॥	सतनाम	जहां-जहां मैं धरिहौ शरीरा। तुम को संग राखो बलवीरा॥	सतनाम	हम तुम करौ यहि विधि प्रीती। यही विश्व सके कोई नहिं जीती॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ४६	सतनाम	हम तुमसे छल छोड़िया, छल करे सो चोर।	सतनाम	भ्रातहीं भ्राता मिल रहीं, मन वचन निज मोर॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	पुरुष से प्रेम प्रीती तुम कीन्हा। छलबल से तीहुं लोक जो लीन्हा॥	सतनाम	ग्रासेवो शक्ति काल मति भयेऊ। संग्रह सर्व ताहि से कीएऊ॥	सतनाम
सतनाम	अमृत तेज बीस संग्रह कीयेऊ। पीता कै तेज धृग जग जीयेऊ॥	सतनाम	छोड़े लोक शोक तुम लीन्हा। यह फल जान फंद बहू कीन्हा॥	सतनाम	जल जीव मीन भीन नहिं जीवै। छीर के सागर सो नहिं पीवै॥	सतनाम
सतनाम	जल में बसिहों जल ही कर निन्दा। जल थल बरत रहा सत जिन्दा॥	सतनाम	जल में विष जो लावै धोरी। दया करहिं लेहिं प्राण बहोरी॥	सतनाम	भीषण बाण तुम हम तन मारा। धन साहब जो उपरहिं झारा॥	सतनाम
सतनाम	तुम संग मिलै चोर जो होई। पुरुष वचन मम हृदय समोई॥	सतनाम	हुकुम सदा सुख सर्व शरीरा। कष्ट मेटा तन रहा न पीरा॥	सतनाम	जैसे परिमल पारस लागा। भया प्रेम बिमल रस पागा॥	सतनाम
सतनाम	सो मम भयो सकल सुख गामी। उछलै प्रेम पुरुष मम स्वामी॥	सतनाम	साखी - ५०	सतनाम	पुरुष कहा सो मम करौ, तुम मम भ्राता साच।	सतनाम
सतनाम	सत कहा सो कीजिए, और वचन सब कांच॥	सतनाम	छन्द तोमर - १२	सतनाम	इमि सत से सुकृत कीन्ह, मम वचन नाहीं भिन्न॥	सतनाम
सतनाम	सत सर्व कहिये सार, जो पिता के दरबार॥	सतनाम	जो हुकुम हाकिम होए, सो बात राखि न गोए॥	सतनाम	सो अदब अदल है सार, करी प्रीत भौ जल पार॥	सतनाम
सतनाम	सोई सुबुद्धि सुधार सुजान, सतपुरुष वचन अमान॥	सतनाम	दोए विष अमृत कीन्ह, सो विदित जग में भिन्न॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
गरूर	गर्व	भुवंग,	तेही	अमृत	नहीं	प्रसंग ॥
तुम	भये	विषधर	जानी,	गुण	बिलग	सानेओ आनी ॥
जग	जीव	जग में	केत,	सब	कीयो	मर-मर प्रेम ॥
जग	जीनीश	पुरुष	पुराण,	सो	करत	तुमरो ध्यान ॥
इमि	छोट	खोट	मलिन,	जो	पुरुष	से है भीन्न ॥
सो	गरब	गरुहा	बास,	इमि	स्वान	स्वानी पास ॥
तेज	उत्तम	करम	विरोध,	नहीं	करत	अपने बोध ॥
इमि	कुमत	सुमत	है साथ,	जेहिं	पुरुष	करहिं सनाथ ॥
गुण	गहीर	ज्ञान	सुगंध,	जेहिं	निर्मल	प्रेम उत्तंग ॥
छन्द नराच - १२						
निर्मल	नीरंता	सब	गुणवंता,	चिंता	चित में	सत बसीअंग ॥
सुन	मम भ्राता	सो	निज ज्ञाता,	राता	बचनहीं	पद लहीअंग ॥
सोई	उजागर	सुख	को सागर,	आगर	सबते	कुल कहीअंग ॥
बिमल	विरोगा	पुरुष	नीसोगा,	शक्ति	न संग्रह	तेहि कहीअंग ॥
सोरठा - १२						
भयो पुरुष से चोर, वचन सबै बिसराइया।						
कीयो कर्म नहीं थोर, अबहुं चेत समहार के॥						
चौपाई						
अब	मम पुरुष	से भिन्न	जो भयेऊ।	तीन	लोक	इमि करता कहेऊ ॥
अब	किमि	होए	दोशर	इमि	बाता।	कहों वचन सुनो मम भ्राता ॥
मम	गुण	प्रकट	भया	जग	हीता।	शास्त्र वेद गुण अतीत पुनीता ॥
जोगी	जती	तपे	गुण	ज्ञाता।	मम	गुण प्रकट सबन में राता ॥
सत	लोक	सत	कोई	नहीं	जाना।	वेद विदित जग मम परधाना ॥
हमते	बिलगि	कोई	नहिं	अहई।	स्वर्ग	पताल महि मंडल कहई ॥
धर्म	धीर	मम	वीर	प्रधाना।	मम	लीये कथीहों जो ज्ञाना ॥
सुकृत	सत	वेद	कवि	काथा।	इमि	जीव होइह तोहरे हाथा ॥
जो	माने	तेहि	देव	मनाई।	इमि	हंसा छपलोकहिं जाई ॥
करै	अकूफ	कामील	तज	कर्मा।	देवा	देई तजे सब भर्मा ॥
शील	सन्तोष	सत	मत	जानै।	सतगुरु	चरण सुधा सम सानै ॥
करै	विवेक	एक	मत	धारई।	डगमग	डगर कबहीं नहीं करई ॥
36						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ५१			
सतनाम			कीन्हैं कौल करार यह, तुम भ्राता मम हीत। पुरुष प्रेम मम जुगुल है, सदा करौ मम प्रीत॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			अगम से छोड निगम में अयेऊ। काल प्रकट घट इमि छवि छयेऊ॥		सतनाम	
			सब में भ्रम दीन्ही मैं डारी। दफा समेत ग्राम नर-नारी॥			
सतनाम			तब मैं सबसे कहा बुझाई। यह है काल कहौ चतुराई॥		सतनाम	
			जो मम कहौ सोई चित दीजै। काल के वचन दूर सब कीजै॥			
सतनाम			चूड़ामणि दूवै दिल कीन्ह विचारा। तुम हो सुकृत सत उपकारा॥		सतनाम	
			लड़ो भिड़ो रहिहौ एक साथ। प्रेम जुक्ती मम होउ सनाथा॥			
सतनाम			सुख चैन कहं तन मन सब वारो। साहेब सूरत प्रेम नहीं टारो॥		सतनाम	
			शिवदत्त दूबे धरा मन धीरा। भक्ति विवेक नाम निज हीरा॥			
सतनाम			शिवनाथ हाथ जोड़ के आगे। तुम सतगुरु गुण जगत में जागे॥		सतनाम	
			मम अधीन लीन तुम पासा। आए शरण काटहुं जम फांसा॥			
सतनाम			इन सबकै मैं दीन्ह दृढ़ाई। काल कर्म चीन्हो चित लाई॥		सतनाम	
			येहि मह खोले निरंजन बीरा। उलट पलट कथौ ज्ञान गंभीरा॥			
सतनाम			साखी - ५२		सतनाम	
			उलट-पलट जग पावहीं, करें गर्भ में बास।			
सतनाम			यही नहीं गुण सतपुरुष को, काल तमासा पास॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			इतना कथा रैन में भयऊ। रैन बीती वासर चलि अयऊ॥		सतनाम	
			देखा ग्राम जो गरब गरूरा। काल प्रचण्ड सबन में जूरा॥			
सतनाम			सुकृत साथ सत एक आशा। दृढ़ होए रहिहौ पुरुष हैं पासा॥		सतनाम	
			चलै तुरन्त तेज धरी धीरा। पुरुष वचन नाम निज हीरा॥			
सतनाम			केशव ग्राम तहां चली गयेऊ। बैठ निरन्तर इमि गुण अयेऊ॥		सतनाम	
			नरोजदास बोले इमि गाता। कीन्हो काल बहुत उतपाता॥			
सतनाम			अगम से आए अगम नहीं गयेऊ। अन विधि बात सबै कुछ भयेऊ॥		सतनाम	
			अब तो प्रगट सबन मिलि देखा। कीन्ह प्रपंच काल इमि पेखा॥			
सतनाम			कारण पाए काल यहां आई। यह प्रपंच केहु गति पाई॥		सतनाम	
			कथे अगम गति गुण है भिन्ना। काल दसा गति निकै चिन्हा॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	37	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जरीया हाथ जौहरी जो करई । हीरा खोटा किमि कर लहई ॥						
खोटा छोटा जाति मलीना । इमिकर वचन कहउं प्रवीना ॥						
साखी - ५३						
उठे प्रात प्रीत करि, चलै वचन निरुवारी ।						
आए पहुंचे नगर में, घर गृह देखा विचारी ॥						
चौपाई						
देखो नर नारी का अंगा । काल मोह तन भयो प्रसंगा ॥						
त्रिया त्रिविध तन व्याकुल भयेऊ । काल कुरूप सबै घट छयेऊ ॥						
मम लघु वचन कहा रिसि आई । वह तो काल छलन को आई ॥						
बुद्धि यह रची सो मची बहु बाता । कुमती काल गुण इमि कर राता ॥						
यह है काल करम बहु जाना । जीतन चाहै पुरुष अमाना ॥						
फेकें उखाड़ी हार वह गयेहु । अब प्रपंच वहां भय ठयेऊ ॥						
शाहमती कहा कर जोरी । साहब सुनो विनय बहु मोरी ॥						
त्रिया तन मती बुद्धि की हीना । साहब सत वचन प्रमीना ॥						
साहब कहे भूला सब कोई । अब तो क्रोध क्षमा कीए होई ॥						
बुद्धि मती में यह गुण राता । हम तो कही भोजा सत बाता ॥						
सेवा दास वचन मम जानी । छल जन करै नीकै पहचानी ॥						
सतपुरुष है सत कह रेखा । बुझी विचार नीकै दिल देखा ॥						
माथ बड़ा है ऊंच लिलारा । लोचन तेज दृष्ट उजियारा ॥						
साखी - ५४						
चीन्हैं नीके विवेक करी, होए कोई जन भिन्न ।						
अरज हमारा राख वै, यहीं वचन कह दीन्ह ॥						
छन्द तोमर - १३						
तुम कहा सत विचारी वहां काल फन्दा डारी ॥						
प्रपंच रचना कीन्ह, सब सूरत हो गई दीन्ह ॥						
यह अन्त फंदा जाल, वे मार वाणी विशाल ॥						
इमि शब्द सांगी गंभीर, मम उलट दीन्हौं वीर ॥						
वे अनन्त मम होई एक, बहु विधि कीन्हो टेक ॥						
जब धरौं तेग समहारी, वह देत फन्दा डारी ॥						
निरंजन नीरखा न आव, वह करत अविगत दाव ॥						
38						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मम	बैर	आदी	जो	कीन्ह,	सतपुरुष	वचन ही लीन्ह ॥
घट	पैठ	आया	वीर,	यह	त्रिगुण	ताप शरीर ॥
वह	भीड़ा	हमसे	जानी,	इमि	करे	को पहचानी ॥
सब	बात	उल्टै	लीन्ह,	सतपुरुष	परिचय	दीन्ह ॥
मम	दीन्ह	ते	ही	निकारी,	वह	गया बहु विधि हारी ॥
भौ	संशय	सागर	छीन,	नहीं	प्रेम	अविगत भिन्न ॥
भयो	आनन्द	मंगल	चार,	सुगंध	सत	है सार ॥
तेज	कोह	मोह	आनन्द,	गयो	काल	कुबधा द्वन्द्व ॥
छन्द नराच - १३						
भौ	परम	अनन्दा	निर्मल	चन्दा,	रन्दा	कालहीं इमकरी अंग ।
पुरुष	प्रतापा	मेटि	तन	तापा,	कांपा	कालहीं नहीं रही अंग ॥
देउ	निकारी	जगत	पुकारी,	हार	चला	नहीं गुण रहीं अंग ।
वचन	न	काया	मानहु	साचा,	चतुर	चोर कहं इमि दही अंग ॥
सोरठा - १३						
सब विधि मंगल चार, दुर्मत दुविधा दूर करो ।						
गहले शब्दहीं सार, त्रिया सुफल सुन ज्ञान मन्त ॥						
चौपाई						
फिर	मम	उलट	गयो	वही	ग्रामा ।	जहवां काल बैठा निज धामा ॥
टीके	थह	कर	कीन्ह	विचारा ।	काल	कर्म देखो अधिकारा ॥
नगर	स्तुति	सब	कोई	करहीं ।	अहें	पुरुष निर्मल गुण गहहीं ॥
करै	सीरीड़	यह	अति	प्रचण्डा ।	मानो	काल कठिन लिए डंडा ॥
थर-थर	कांपहिं	सब	नर-नारी ।	निकट	जाए	फिर कहे पुकारी ॥
है	यह	कौन	करे	कठिनाई ।	अति	प्रचंड गुण कहा न जाई ॥
इमि	करि	तौ	तड़फ	सब	डारौं ।	मम अमान इमि कबहीं न हारौं ॥
वृष्टि	सृष्टि	में	होखै	न	पावैं ।	यही विधि सब कह त्रास दिखावैं ॥
मोहकम	दूबै	से	कहा	बुझाई ।	कहों	वचन सुनौ चित लाई ॥
एक	गुण	जाहिर	करों	अपाना ।	होए	वृष्टि तौ लोग पतियाना ॥
आठ	पहर	है	रैन	समेता ।	यही	करार कीन्हौ निज हेता ॥
आठ	पहर	में	नहीं	वर्षा	आई ।	हौं तुम चोर करिहों चतुराई ॥
39						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ५५			
सतनाम			जाए कहो इमि काल सो, येही विधि वचन विचारि।		सतनाम	
			हार जीत यह नीति है, साच कहा निरुवारि॥			
			चौपाई			
सतनाम			तब वो गए ज्ञान इमि कीन्हा। करी सलाम तब बैठे लीन्हा॥		सतनाम	
			मम वकील हों अकल बिचारी। कहौं वचन बूझै निरवारी॥			
			साहब भेजा साहब के पासा। सो निज वचन करो प्रकाशा॥			
सतनाम			एक गुण जाहिर करौ अपाना। वर्षा झरी करौ पृथ्वी सुखाना॥		सतनाम	
			आठ जाम महं यह सब चतुराई। काल दशा प्रकट तुम आई॥			
			तुमसे नहीं तो हम यह किन्हा। देव दिखाए पुरुष है भिन्ना॥			
सतनाम			इतना सुनत कोप अति भयऊ। असकै तो तड़फ जिमि कहेऊ॥		सतनाम	
			चाहों तो हृद गर्द करी डारौं। वर्षा निकट दूर ले टारौं॥			
			कोपा गर्ज गर्द अति भयेऊ। उसके नासे बात न अयेऊ॥			
सतनाम			चले तुरन्त हमरे पह आई। सब निज अर्थ कहा समुझाई॥		सतनाम	
			कहां ले कहौं आपे गुण ज्ञाता। करो विचार कहे इमि बाता॥			
			साखी - ५६			
सतनाम			ऐसा कोपा कर सकै, त्रास भया जीव मोर।		सतनाम	
			करहीं विवेक विचार के, है साहब नहीं चोर॥			
			चौपाई			
सतनाम			हम तो कहा काहे को माना खरा खोटा नहीं पहिचाना॥		सतनाम	
			सत सुकृत कर यह नहीं कामा। यह तो काल कठिन धरु जामा॥			
			त्रिगुण यह त्रिविध विकारा। मन की सन्धि कहे करतारा॥			
सतनाम			वह गुण अमर मरे वह कैसे। काया समेत सतपुरुष हैं ऐसे॥		सतनाम	
			है वह निकट विकट जन जानी। करौं अरज वर्षा झरी आनी॥			
			करूं अरज सुनो चित लाई। साहब यह गुण दे दिखाई॥			
सतनाम			काल सो अड़ी अटक यह राखा। निज गहि प्रेम निरन्तर राखा॥		सतनाम	
			उठा घटा धन घोरन लागा। चहुं ओर झरी झपट कर जागा॥			
			धन्य-धन्य गुण इमिकर कहेऊ। दया दर्द फल इमि कर पयेऊ॥			
सतनाम			सब जन भये सचेत सयाना। काल के वचन नहीं मन माना॥		सतनाम	
			40			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम			
सतनाम	झंडा से झारी वचन मम कहेऊ। है यह काल मर्म नहीं पयेऊ॥ काल कुबुद्धि सुध सब गयेऊ। सत सुकृत से पीठ इमि दीयेऊ॥ तब वह कथन लगा चतुराई। जर जवाब बहु बात बनाई॥	सतनाम	साखी - ५७ वा के पास तुम दास हो, सेवा करो लवलीन। गुण अवगुण विवरण करें, मति मराल है भिन्न॥ चौपाई	सतनाम	वर्षा कृषि बहुरि फिर गयेऊ। बहु विधि कष्ट किसानहिं भयेऊ॥ कीन्ह निवेरा थो पर आई। उलट जाई फिर पलट बुझाई॥ सावन गया भादो नियराना। भागी चलावै छोड़ा ठिकाना॥ जिन्ह-जिन्ह सेवा कीन्ह लौ लीन्हा। लघु बहुवचन ताहि कहं दिन्हा॥ लागा नाचन रचि उपाई। कुद-फांद सब कला दिखाई॥ तेज ग्राम गर्व सब झारी। राजपुर कह इमि पग ढारी॥ आए पहुंचा चकित भयऊ। दफा दौर दर्शन के गयऊ॥ अति आनन्द गुण सब मिलि गाया। मानो दरस महाफल पाया॥ सेवा करहिं विविध बहु भांती। कल नहिं लेहिं दिवस और राती॥ काल के द्वन्द्व बन्द सब भयेऊ। जैसे मरकट बांध नचेऊ॥ अनन्त कथा कथै बहु विधि ज्ञाता। सब के दिल में निश्चय राता॥ सत सुकृत कै छूट गये बाता। करम काल यह भाए विधाता॥	सतनाम	साखी - ५८ करता काल न चिन्ही, चर्चा प्रेम अधार। विष अमृत करी सानही, भूलै मूढ़ गंवार्॥ छन्द तोमर - १४	सतनाम	सब भ्रम भुली अनीत, विष किन्ह अमृत प्रीत॥ यह काल चतुरा चोर, जीव घोंच अपनी ओर॥ सब चरण लोभी नेह, जैसे भ्रम भूले येह॥ जौं सुमन सरस है रीत, फूल बहुत विविध पुनीत॥ ज्यों कमल भ्रमर पाए, बहु विषय वास सुहाए॥ ज्यों करि भ्रम भुलान, इमि सेमर कीन्हो पान॥ जब फूल से फल फूटी, इमि रोवहीं माथा कूटी॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम			

41

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
फेरि	ललनी	लागै	धाए,	जिमि	उल्टी	बाजै आए ॥
ज्यों	मरकट	मुट्टी	लाए,	इमी	पकरी	आप बंधाए ॥
तुरंग	रथ	से	प्रीति,	इमी	दौड़	धावहीं नीति ॥
इमि	धोखा	धन-धन	प्राण,	इमि	हरेव	उनका ज्ञान ॥
ना	तीन	सरस	बखानी,	इमि	बूढ़े	धोखा जानी ॥
इमि	करम	कीन्हों	नीच,	नहीं	चिन्हेवो	माहूर मीच ॥
विष	खाए	प्राणहीं	खोए,	इमि	जात	भव जल रोए ॥
इमि	गुन	दीन्हो	काटी,	मझधार	तरणी	फाटी ॥
छन्द नराच - १४						
तरणी	फाटी	सब	गुण	माटी,	साट	दीन्हों जब इमि केता ।
गुण	नहीं	ज्ञाता	बहो	जल	राता,	प्रेत भये सब जड़ जेता ॥
बान	विशाला	हृदय	साला,	छल	बल	बाजी सो धिरता ।
विदित	है	काला	सप्त	पताला,	लाल	चिन्हे बिन इमि रहता ॥
सोरठा - १४						
केता कहेउ पुकारी, जम जबरा दारुण अहे ।						
मानहुं वचन हमारी, अमरापुर अमृत पीये ॥						
चौपाई						
वर्षा	विविध	भव	गुण	हीता ।	गुण	गामी गुण बहुत पुनीता ॥
जलामयी	सब	जल	थल	भयेऊ ।	आनन्द	मंगल इमि गुण गयेऊ ॥
उजियार	दास	आए	मम	पासा ।	हम	से कीन्ह वचन प्रकासा ॥
राजपुर	रैन	एक	रहेऊ ।	निन्दा	काल	बहुत कुछ कीयेऊ ॥
दफा	बटोरे	हाथ	ओए	कीन्हा ।	कोई	न बोले वचन प्रवीना ॥
रहे	मौन	मन	मोहिं	नहीं	नीका ।	कपटी वचन कपट सब फीका ॥
साजो	धार	दौड़	इमि	धरिहौं ।	सम्मुख	जाय काल से लरिहौं ॥
अब	मम	जाऊं	विलंब	ना लाई ।	दल	निज वचन कहा समुझाई ॥
दल	दास	लीजौं	सब	साथा ।	तब	नीचै होए काल कै माथा ॥
दुरजन	दल	बल	छोट	न लखिए ।	यह	महा कठिन काल गुण देखिए ॥
जे	जुरा	तेहिं	लिन्ह	जुराई ।	चले	तुरंत विलम्ब न लाई ॥
धारी	दूई	दिन	जबे	यह	रहेऊ ।	राजपुर के निकटे गयेऊ ॥
42						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ५६			
सतनाम			दल दास निज पास ले, और दास दोए चारी। देखा देखी काल सों, कहा वचन निरुवरी॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			दल दास अस बोले विचारी। कीजै मन्त्र वचन निरुवारी॥ पहले गांव ठांव देखा लीजै। दफा समेत ज्ञान सब कीजै॥ सबके नीके करे बटोरा। तब पग दीजै काल कै ओरा॥		सतनाम	
सतनाम			तब दिल में मम क्रोध जो भयऊ। काल तेज भ्रम इमि छयऊ॥ तब मैं तेज तिरछन होई गयऊ। दर के उपर तुरन्तहि अयेऊ॥ बोली वचन मम कहा पुकारी। दपट कीन्ह सत सांधी सम्भारी॥		सतनाम	
सतनाम			कर से काल कर्म ते कीन्हा। झूठी वचन काहे कह दीन्ह॥ विप्र एक जो बोला विचारी। क्षमा कीजै सुन वचन हमारी॥ माने सत शीतल होए गयेऊ। सबके ले तुरन्तहिं अयेऊ॥		सतनाम	
सतनाम			किन्हों थै तेहि गांव तुरन्ता। सबै बुलाए कीन्हों एक अंता॥ सब सो वचन जो कहा विचारी। यह है काल विविध मत डारी॥ सुनहु सबै मिलि होहू सचेता। प्रेम जुगती रहिये निज हेता॥		सतनाम	
			साखी - ६०			
सतनाम			राजधर अति धीर करी, बोले वचन कवचारी। साहब साहब सत सामर्थ है, काल रहा इमि हारी॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			प्रेम प्रीति करि बोलउ बयना। सतगुरु चरण सदा सुखा चैना॥ बहुरि ना करिहो वासे प्रीती। सतगुरु प्रेम सदा नै नीती॥ धोखे परे वो मरम नहीं जाना। अति भौ मोह पीछे पछताना॥ गुन औगुन सब तोहरे हाथा। जेहि चितवहु सो होए सनाथा॥ सो मम दास सदा हितकारी। प्रेम पंथ में पग जिन्हि ढारी॥ हृदय रतवति सतगुरु चरना। जरा मरन भव कबही ना परना॥ सो मम दास सदा सुखावासी। काटी कर्म कलि प्रेम उपासी॥ जंगल प्रेम जुगति जेहि राता। तन मन वारै सतगुरु ग्याता॥ ताते भव से लीन्ह निकारी। अमर लोक निश्चय पगु ढारी॥ अति आनन्द सुखा करिहैं दा		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
लपटी घानी धन तहवां अहई। सुखसागर में दुःखा नहिं सहई॥						
ब्रिग से पुहुप सदा उजियारा। अमृत चाखाहिं प्रेम अधारा॥						
साखी - ६१						
तन मन धन सब वारिए, सतगुरु चरण सहाय।						
विघ्न भ्रम सब भाजिह, आनन्द मंगल गाय॥						
चौपाई						
फिर मैं उठेवो तख्त कह गयेऊ। बैठ तहां कुछ मति ईहा ठयऊ॥						
ऐसन दिल में कीन्ह विचारा। होत प्रात वहां पगु ढारा॥						
सुरत विचारी तहां चली जाई। बैठे तहां निज थै बनाई॥						
पुरन्दर दर पर पहुचै आई। कीन्ह सलाम बहु तत्व लगाई॥						
चर्चा कीन्ह गुण सबकी बाता। प्रेम भक्ति यह सब कहें राता॥						
भ्रम रहा सो गया बिहाई। आनन्द मंगल तुम प्रभुताई॥						
दया कीजै दरस वह करई। सब जीव साहब कर अहई॥						
भया मोह कछ भ्रम भुलाना। झण्डा साहब के निश्चय जाना॥						
है निज सेवक दास तुम्हारा। यह अरज सुन लीजै हमारा॥						
मम नहीं कपट वाही से कीन्हा। प्रेम प्रीति दया बहु लीन्हा॥						
जब अइहें तब लेवै पाली। जैसे फूल सीचें यह माली॥						
यह सब वृक्ष हमारा अहई। जैसे वोहित जल में रहई॥						
साखी - ६२						
आए झण्डा तुरन्त तब, परसे दरसन आए।						
करि सलाम ठाढ़े भए, दुर्मत सब दूर जाए॥						
चौपाई						
मम गाफिल नित मोह सनीपा। साहब कबहीं न होहिं अनीपा॥						
तुम दया निधि हो मम तुम दासा। औगुण मम काटहौं जम पासा॥						
तुम को छोड़ कहां को जाई। ज्यों जहाज खाग रहै समाई॥						
देखो सिन्धु तब होए तरासा। उड़िकै जाए आवै फिर पासा॥						
ऐसो भव को भ्रम विकारा। साहब सत यह खेवन हारा॥						
गुनाह बख्श में सब दूर कीन्हा। हों निज दास प्रेम तुम दीन्हा॥						
दर्द दया है हमरे पासा। जो कोई भक्ति करे निज दासा॥						
ताकै निकट विकट नहीं अहई। जो सतगुरु चरण सुधा सम रहई॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जुगती मुक्ती पंथ निर्मल दासा। देखो अविगत अजब तमाशा॥	सतनाम	जहां सांच तहां साहब सांचा। सांच नहीं तब झूठ है कांचा॥	सतनाम	हृदय कपट पट गयल फारी। आनन्द मंगल सदा सुखारी॥	सतनाम
सतनाम	धन सो प्रीती रीति मम पासा। तन मन वारेओ मम दासा॥	सतनाम	साखी - ६३	सतनाम	सतगुरु चरण सुधा सम, प्रेम प्रीति निज भाव।	सतनाम
सतनाम	गुण अवगुण विवरण करौं, सोई मराल मति आव॥	सतनाम	छन्द तोमर - १५	सतनाम	सो हंस वंश गम्भीर, जो रहे सरवर तीर॥	सतनाम
सतनाम	सोई संत सुधार-सुजान, विधि करत नाहीं पान॥	सतनाम	सोई अमी अमृत नाम, सोई विमल सुन्दर धाम॥	सतनाम	सोई उजल निर्मल संत, पद पाये सतगुरु मंत॥	सतनाम
सतनाम	सब संशय सागर जारी, गुन अमृत वचन विचारी॥	सतनाम	इमि निर्मल ब्रह्म है सार, घटबारी किन्ह उजियार॥	सतनाम	इमि पद्म पद गुन हित, वह वाह वाही प्रीत॥	सतनाम
सतनाम	मन भ्रमर भौ तेहि पास, गुन अतीत प्रेम प्रकाश॥	सतनाम	तहां धानी धन है मूल, सब कपट काटेओ शूल॥	सतनाम	सब छुटेवो भ्रम विकार, गुण अतीत अगम अपार॥	सतनाम
सतनाम	परब्रह्म परहित जानी, नहीं लेप लागे आनी॥	सतनाम	त्रिदेव त्रिगुण जानी, इमि वेद विद्या मानी॥	सतनाम	सोई अनन्त भौगो जाल, यह फन्द बान विशाल॥	सतनाम
सतनाम	खाट कर्म भ्रम विकार, तेज अमृत कीन्हौ सार॥	सतनाम	अमर विष जेहिं भेद, कोई संत करहीं निखोद॥	सतनाम	छन्द नराच - १५	सतनाम
सतनाम	करे विचारा तेज अचारा, निर्मल सारा गुण गाई।	सतनाम	अबरी के बारा भौ जल पारा, धारा तिरछन बीत जाई॥	सतनाम	अमी अधारा निर्गुण पारा, वारे कबहीं ना फिश्र आई।	सतनाम
सतनाम	सतगुरु साचा या तन काचा, चर्चा गुण में पतपाई॥	सतनाम	सोरठा - १५	सतनाम	यह पद करौं विचार, कुमति काल बीत जाईहैं।	सतनाम
सतनाम	निर्मल नाम आधार, सो पद पाए अधीन रहैं॥	सतनाम	45	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	आगे यह निज करो विचारा। प्रेम जुगती निज दफा हमारा॥	सतनाम	सतगुरु चरण सदा गुण गावै। भवसागर की भरम मिटावै॥	सतनाम	उजियार दास मम दास जो अहई। सदा सुखद पद इमि कर गहई॥	सतनाम
सतनाम	अहै मुसाहिब मम तेहि जाना। सतगुरु पद इमि करे बखाना॥	सतनाम	दल दास पास गुण अहई। सतगुरु चरण सुधा सम लहई॥	सतनाम	कान गोए गुन कहा विचारी। दफा हमार शब्द निरुवारी॥	सतनाम
सतनाम	सतगुरु सत शब्द प्रवीना। बुद्धि विवेक ज्ञान कहं चिन्ह॥	सतनाम	ज्ञान चिन्ह सोई हंस हमारा। बिमल प्रेम मति निर्मल सारा॥	सतनाम	गजदास पास मम दासा। सतगुरु चरण जो करे निवासा॥	सतनाम
सतनाम	सतगुरु चिन्ह परम पद पावै। बिनु चिन्हे भवसागर आवै॥	सतनाम	सन्धि बाल हृद हुदा जो कीन्हा। जैसन मनसफ ताकह दिन्हा॥	सतनाम	हमके कपट लपट नहीं अहई। साच बात यह लिखा के कहई॥	सतनाम
सतनाम		साखी - ६४		सतनाम		सतनाम
सतनाम		कान गोएवो सन्धि वाला, सब सो कहा विचारी।		सतनाम		सतनाम
सतनाम		अमृत करन अमृत फल है, विष जो देवे डारी॥		सतनाम		सतनाम
सतनाम		चौपाई		सतनाम		सतनाम
सतनाम	मनीदास कहं बखशीश कीन्हा। मनसफ है कागज लिखा लीन्हा॥	सतनाम	हुदा-हुदा सब कहा विचारी। जो जन जानहिं मर्म हमारी॥	सतनाम	तेजे विकट-कपट नहीं राखौ। सतगुरु चरण सुधा सम चाखौ॥	सतनाम
सतनाम	जो पद पंकज निश्चय धरहीं। भव सागर में काहे को परहीं॥	सतनाम	हुकुम राखो सो हुक्मी अहई। संत सिपाह सदा गुण कहई॥	सतनाम	सतगुरु वचन राखौ कर जोरी। तेज कुमति अमृत रस बोरी॥	सतनाम
सतनाम	अमृत सागर सुखा बहुता। सतगुरु प्रेम राखौ नवनीता॥	सतनाम	सो गुण ज्ञान सदा प्रमीना। कुमति काल पाप होए छीना॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		साखी - ६५		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतगुरु सादा सनिप में, पति पावन करी जानी।		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सो मैं लिखा विवेक करी, लेहु दफा सत मानी॥		सतनाम		सतनाम
सतनाम		चौपाई		सतनाम		सतनाम
सतनाम	आगे कथा विवेक जो कीन्हा। सुमति सार पद इमि लिख लीन्हा॥	सतनाम	जैसन देखा सुरत सत ज्ञाता। तैसन लिखा लिन्ह निज बाता॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		46		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मम मन्दिर में रहेऊ एक बारा। सुन्दर सुबुद्धि निज वचन पियारा॥	सतनाम	नाम फकीर सबै केहु राखा। दया भाव करी सब मिल भाखा॥	सतनाम	तासु मातु विधवा तब भयेऊ। भक्ति भाव गुण इमि कर गयेऊ॥	सतनाम
सतनाम	बालक सेवा करहिं दिन राती। एहि विधि पालहिं बहु विधि भांती॥	सतनाम	शाहजादा ताहि मम कियेऊ। येही हुदा उन्हें लिख दियेऊ॥	सतनाम	पीछे शीतले कीन्ह प्रवेसा। बहुते कष्ट दीन्हा कवेलेसा॥	सतनाम
सतनाम	शीतला मानी कोई करहि। वेवाहा के ध्यान जो धरहि॥	सतनाम	उनकी महिमा दिन उठाई। अनन्त रूप होए छैके आई॥	सतनाम	नष्ट करन चाहे यह बाता। यह विधि काल चाहै उतपाता॥	सतनाम
सतनाम	छैकिसि कंठ उर्ध कंह भयेऊ। महा विकट यह घट में छयेऊ॥	सतनाम	साखी - ६६	सतनाम	शरण शरण गोहराई के, बालक कीन्ह पुकार।	सतनाम
सतनाम	तुम साहब मैं सेवका, मेटेहु कष्ट हमार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	मैं बन्दा तुम साहब मेरा। मेटी कष्ट यह करहुं निबेरा॥	सतनाम
सतनाम	नर-नारी मिलि रौदन ठयऊ। डांट डपट में तेहि समझयऊ॥	सतनाम	बेबाह के देहु दोहाई। दर्द बन्द वौय करिहिं भलाई॥	सतनाम	पहुंचे साहब कीन्ह निबेरा। उर्ध रहा अर्ध के फेरा॥	सतनाम
सतनाम	तुरै तेज आप असवारा। अति तिरछन गुण अमृत सारा॥	सतनाम	खीरन दास फकीर जो रहेऊ। देह के छूटे बरस एक भयेऊ॥	सतनाम	हंस खीरन साहब के साथ। बहु विधि साहब किन्ह सनाथा॥	सतनाम
सतनाम	हुकुम हुआ छड़ी वर भयऊ। जम के मारी बाहर कर दियेऊ॥	सतनाम	आनन्द भया मूल मंगल चारा। धन-धन सब कीन्ह पुकारा॥	सतनाम	देखी दिखाए अगम सब भयेऊ। बालक बहुविधि कथा सुनयऊ॥	सतनाम
सतनाम	अमर लोक वो जन की करनी। अपने मुखा से बालक बरनी॥	सतनाम	ऐसो भयो सुबुद्धि सुजाना। आदि अन्त की कथा बखाना॥	सतनाम	खीरन दास पास वोए रहई। ताके नाम लिखान के अहई॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ६७	सतनाम	बालक बोला विवेक करी, अविगत वचन विचारी।	सतनाम	खीरनदास की महिमा, लिखो ग्रंथ सुधारी॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द तोमर - १६			
सतनाम	मम कौल किन्ह विचारी,	इमि लिखौ पदहीं सुधारी ॥	सतनाम			
सतनाम	मैं वचन तेही दिन्हीं दिन,	इमि कथा सत लिखा लिन्ह ॥	सतनाम			
सतनाम	सर्व ज्ञान सब गुण सार,	गुण अतीत अगम अपार ॥	सतनाम			
सतनाम	यह दया सिन्धु गम्भीर,	सब कष्ट मेटेउ पीर ॥	सतनाम			
सतनाम	सामर्थ सकल सुभाव,	गुण अगम निगम न पावे ॥	सतनाम			
सतनाम	इमि दया दरसन दीन्ह।	गुण सन्त से नहिं भिन्न ॥	सतनाम			
सतनाम	जब परत भव में भीर,	मानो निकट ठाढ़ै तीर ॥	सतनाम			
सतनाम	प्रतीत प्रेमहीं सार,	इमि करत भव जल पार ॥	सतनाम			
सतनाम	जम जोर जालिम होए,	तेहि गएब धका खोए ॥	सतनाम			
सतनाम	इमि अजर अगम अमान,	मम जानि कर विख्यान ॥	सतनाम			
सतनाम	सुर देव देवनि देव,	नहिं खोज पाहनि भेव ॥	सतनाम			
सतनाम	वोय संत मंत के पास,	जहां ज्ञान गुण प्रकाश ॥	सतनाम			
सतनाम	नहिं वेद विद्या दान,	खाट कर्म कर्म न जान ॥	सतनाम			
सतनाम	गुण विमल भक्ति विवेक,	जिन्ह समुझ बांधै टेक ॥	सतनाम			
सतनाम	गुन हंस वंश विचारी।	नहीं जात भाव जल हारी ॥	सतनाम			
			छन्द नराच - १६			
सतनाम	सुनो संत सुजाना निर्मल ज्ञाना,	ध्यान धरौ भव में तरते ।	सतनाम			
सतनाम	सत वचन हमारा करौ विचारा,	सारहीं शब्दही जो गहते ॥	सतनाम			
सतनाम	विघ्न विकारा सब दुर डारा,	वार कबहीं नहीं दुखा सहते ।	सतनाम			
सतनाम	सतगुरु सारा सब गुण प्यारा,	धार धीर कन्हरी गहते ॥	सतनाम			
			सोरठा - १६			
सतनाम		भै सम्पूरण ज्ञान, करहु विवेक विचार के।	सतनाम			
सतनाम		सुनहु संत सुजान, गुरु पद कंज मज्जन करो ॥	सतनाम			
			साखी - ६८			
सतनाम		हीरामणि निज दास हैं, सब दासन को दास।	सतनाम			
सतनाम		सतगुरु से परिचय भई, ब्रिगसे प्रेम प्रकाश ॥	सतनाम			
			ग्रन्थ काल चरित्र पूर्ण			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम